ओ३म्

आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य समाज के संस्थापक व महान समाज सुधारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

(संक्षिप्त रंगीन सचित्र जीवनी)

प्रेरणा

धर्मपाल आर्य

सम्पादक

विजय भूषण आर्य

चित्रांकन

भारत मकवाना

प्रकाशक-वितरक

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,

427, गली मन्दिर वाली, नया बांस, दिल्ली-110006

फोन-011-43781191

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड़ नई दिल्ली -1 फोन न. 011-23360150, 233659559

email: aryasabha@yahoo.com website: thearyasamaj.org

978-81-955031-2-5

प्रचारार्थ मूल्य : २५/- रूपये मात्र

महर्षि दयानन्द जी के विषय में महापुरुषों के विचार

1. महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम सन्देशवाहक तथा मानवता के उपासक थे। **– लोकमान्य तिलक**

2. मैंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और उससे मेरे जीवन का लक्ष्य बदल गया। आर्य समाज के सिद्धांत सार्वभौमिक हैं। उन्हें हराने की किसी में शक्ति नहीं है। **– पडित रामप्रसाद बिस्मिल**

3. स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरुषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य, सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे।

– महात्मा गांधी

4. स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है इसलिए वे केवल आर्य समाजियों के लिये ही नहीं अपितु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं। **–कस्तूरबा गांधी**

5. महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का विकास किया जो उसके आचार सम्बंधी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुत्थान के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा हाथ है। संगठन कार्य दृढ़ता, उत्साह और समन्वयपालकता की दृष्टि से आर्य समाज की समता कोई और समाज नहीं कर सकता।

– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

6. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बड़े विद्वान् और वेदों के बहुत बड़े समर्थक थे। उत्तम विद्वान् के अतिरिक्त साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके अनुयायी उनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। हमसे स्वामी दयानन्द की बहुत मुलाकात थी। हमेशा इनका निहायत आदर करते थे। वह ऐसे व्यक्ति थे जिनकी उपमा इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है।

– महर्षि के समकालीन–सर सैयद अहमद खाँ, (अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक)

7. मैंने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों से सीखा। **– दादाभाई नौरोजी**

8. स्वामी दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा और हिन्दू जाति के रक्षक थे। **– महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर**

9. स्वामी दयानन्द जी का सबसे बडा योगदान यह था कि उन्होंने देश को किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया। उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली। **– लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल**

10. महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने जो स्वराज्य का पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं। **– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन**

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द जी के आने से पूर्व भारत की दशा-

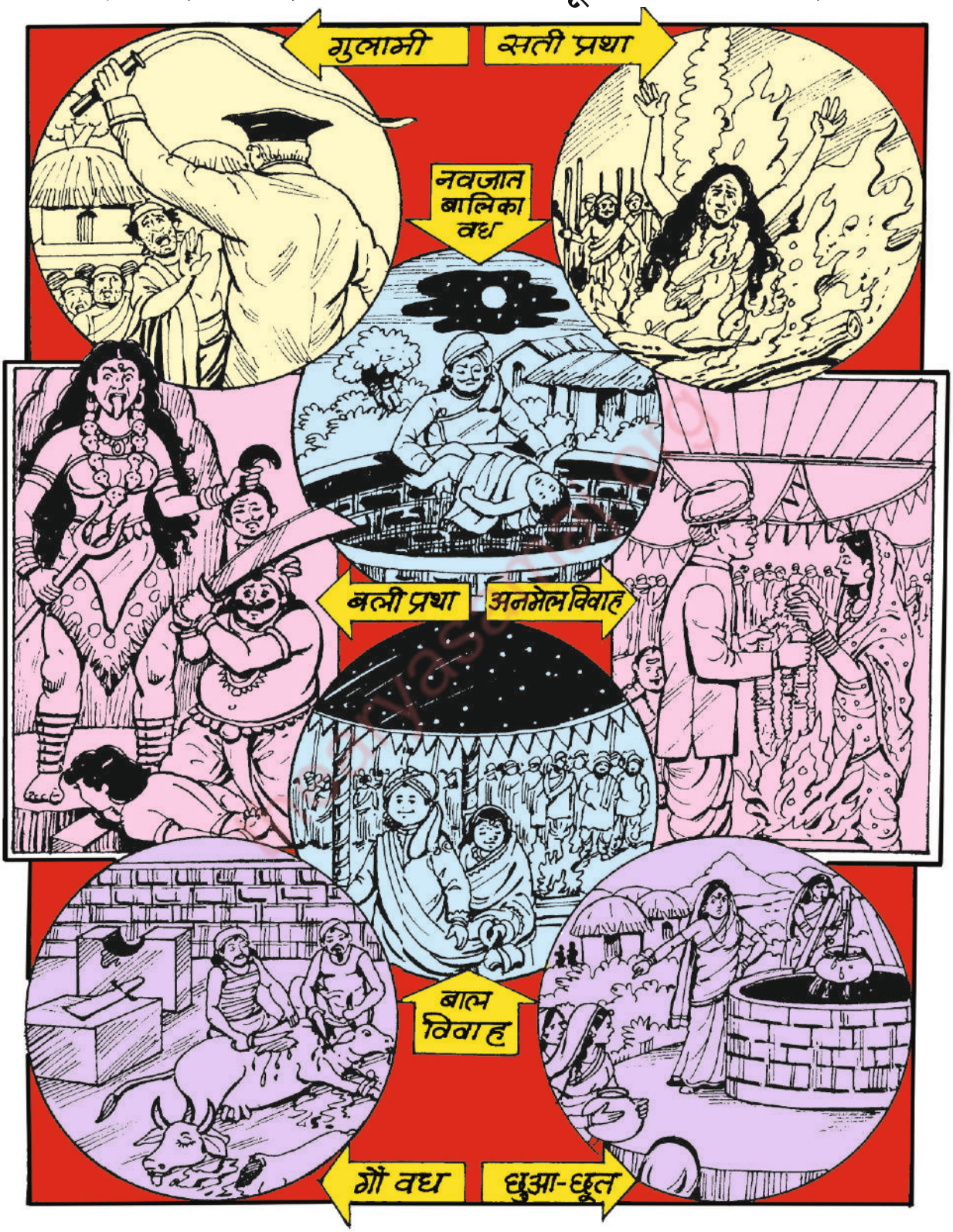

जन्म- सम्वत् 1881 फाल्गुन बदी दसवीं, 12 फरवरी 1824 को गुजरात के मौरवी प्रांत के ग्राम टंकारा में **कर्षन तिवारी** के घर एक सुन्दर बालक ने जन्म लिया। **तिवारी जी** जन्म से ही औदीच्य ब्राह्मण थे। वे धनाढ्य ज़मीदार और सरकार की ओर से राजस्व अधिकारी नियुक्त थे। उनके मूल नक्षत्र में जन्म होने के कारण माता पिता ने उनका नाम **मूलशंकर** रखा। जिसने कालान्तर में **महर्षि दयानन्द सरस्वती** के रूप में दीक्षित होकर विश्व को **वैदिक ज्ञान** से आलोकित किया।

लेखन व चित्रांकन: भारत मकवाना प्रेरणा श्री धर्मपाल आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महापुरुष तो बहुत हुए पर महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जैसा कोई नहीं, जिसका प्रेरणादायी जीवन अलग ही है। जिन्होंने देश के ही नहीं, विदेश के विद्वानों को भी एक नई दिशा दी।

बचपन में चाचा व प्यारी बहन की मृत्यु देखकर उनके मन में वैराग्य भावना उत्पन्न हो गई। एक रात वे चुपचाप सत्य की खोज में घर से निकल पड़े...
पाखण्डी साधुओं की टोली ने मूलशंकर को लूटा।
छोकरा अमीर लगता है, उसके सोने के आभूषण तो देखो।
कहाँ से आ रहे हो, और कहाँ जा रहे हो बच्चा?
मैंनें वैराग्य ले लिया है, सच्चे गुरु की तलाश में जा रहा हूँ।
वैरागी को आभूषण शोभा नहीं देते, इन्हें त्याग दो।
मूलशंकर सब गहने उन्हें देकर आगे बढ़ गये।

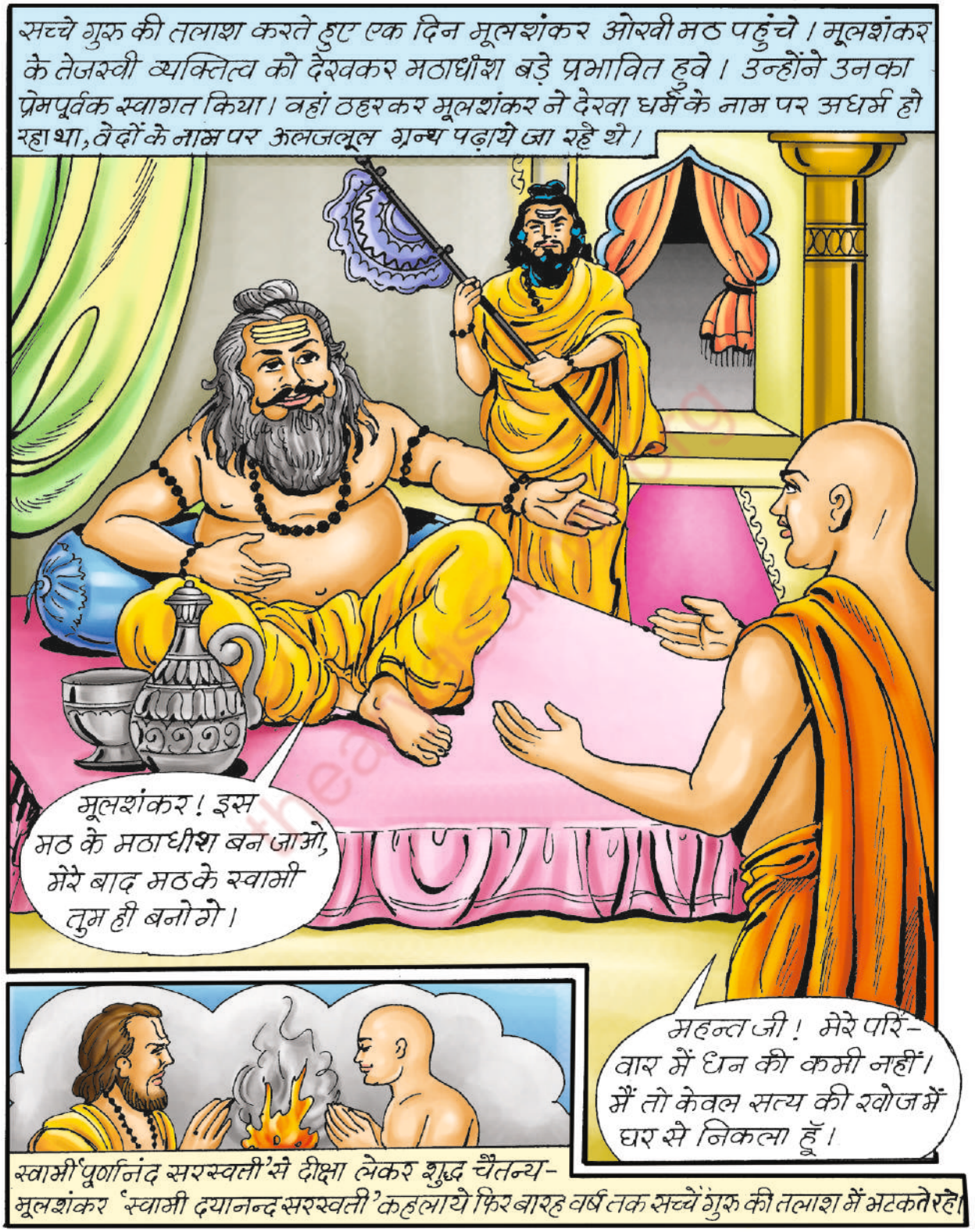
सच्चे गुरु की तलाश करते हुए एक दिन मूलशंकर ओखी मठ पहुंचे। मूलशंकर के तेजस्वी व्यक्तित्व को देखकर मठाधीश बड़े प्रभावित हुवे। उन्होंने उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया। वहां ठहरकर मूलशंकर ने देखा धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा था, वेदों के नाम पर ऊलजलूल ग्रन्थ पढ़ाये जा रहे थे।
मूलशंकर! इस मठ के मठाधीश बन जाओ, मेरे बाद मठ के स्वामी तुम ही बनोगे।
महन्त जी! मेरे परिवार में धन की कमी नहीं। मैं तो केवल सत्य की खोज में घर से निकला हूँ।
स्वामी 'पूर्णानंद सरस्वती' से दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य-मूलशंकर 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' कहलाये फिर बारह वर्ष तक सच्चे गुरु की तलाश में भटकते रहे।

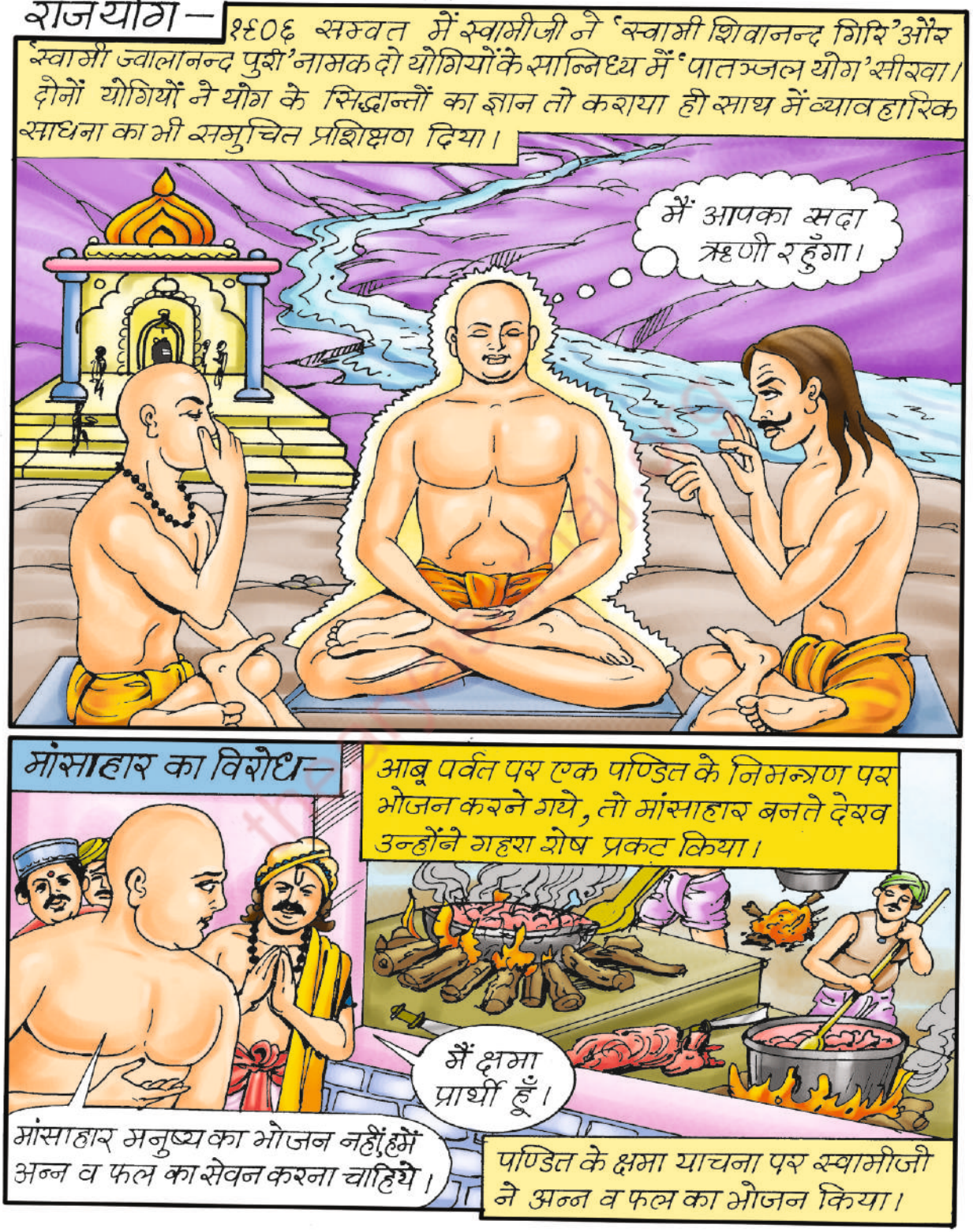
राजयोग –
१९०६ सम्वत में स्वामीजी ने 'स्वामी शिवानन्द गिरि' और 'स्वामी ज्वालानन्द पुरी' नामक दो योगियों के सान्निध्य में 'पातञ्जल योग' सीखा। दोनों योगियों ने योग के सिद्धान्तों का ज्ञान तो कराया ही साथ में व्यावहारिक साधना का भी समुचित प्रशिक्षण दिया।
मैं आपका सदा ऋणी रहुँगा।
मांसाहार का विरोध –
आबू पर्वत पर एक पण्डित के निमन्त्रण पर भोजन करने गये, तो मांसाहार बनते देख उन्होंने गहरा रोष प्रकट किया।
मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।
मांसाहार मनुष्य का भोजन नहीं, हमें अन्न व फल का सेवन करना चाहिये।
पण्डित के क्षमा याचना पर स्वामीजी ने अन्न व फल का भोजन किया।

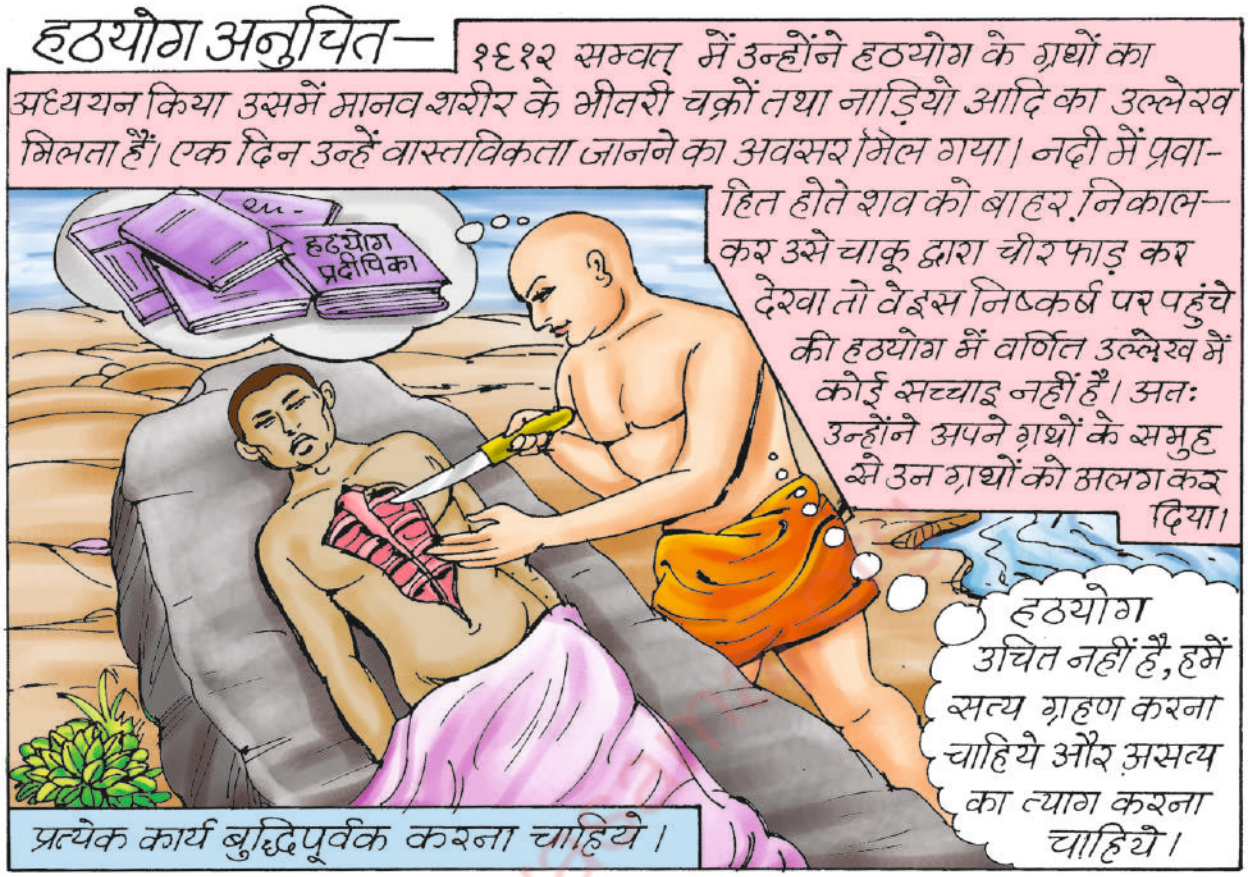
हठयोग अनुचित–
१६१२ सम्वत् में उन्होंने हठयोग के ग्रथों का अध्ययन किया उसमें मानव शरीर के भीतरी चक्रों तथा नाड़ियो आदि का उल्लेख मिलता हैं। एक दिन उन्हें वास्तविकता जानने का अवसर मिल गया। नदी में प्रवाहित होते शव को बाहर निकाल–कर उसे चाकू द्वारा चीर फाड़ कर देखा तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे की हठयोग में वर्णित उल्लेख में कोई सच्चाइ नहीं हैं। अतः उन्होंने अपने ग्रथों के समुह से उन ग्रथों को अलग कर दिया।
हठयोग प्रदीपिका
हठयोग उचित नहीं है, हमें सत्य ग्रहण करना चाहिये और असत्य का त्याग करना चाहिये।
प्रत्येक कार्य बुद्धिपूर्वक करना चाहिये।

रीछ से भिडन्त–
चल भाग जा!
एक समय स्वामीजी नर्मदा के निकटवर्ती जंगलों में विचरण कर रहे थे। तभी उनके सामने एक भयंकर रीछ ने दौड़ते हुवे हमला करना चाहा परन्तु निर्भिक सन्यासी ने अपने हाथ का सोटा रीछ के सामने बढाया, रीछ भयभीत होकर उल्टे पाव भाग गया।

सच्चे गुरु की तलाश करते करते ३६ वर्षीय अवस्था में गुरु विरजानन्द से भेट हुई—
कौन हो तुम?
मुझे सत्य की खोज करनी है। मैंने वेदांत और योग का अध्ययन किया है। और सारस्वत गंथों से संस्कृत व्याकरण भी पढ़ा है। फिर भी मुझे शांति नहीं मिली।
इन ग्रंन्थों को यमुना में फेंक कर मेरे पास आ।
दयानन्द ने बिना किसी हिचक के उन्हें यमुना में फेंक दिया और...

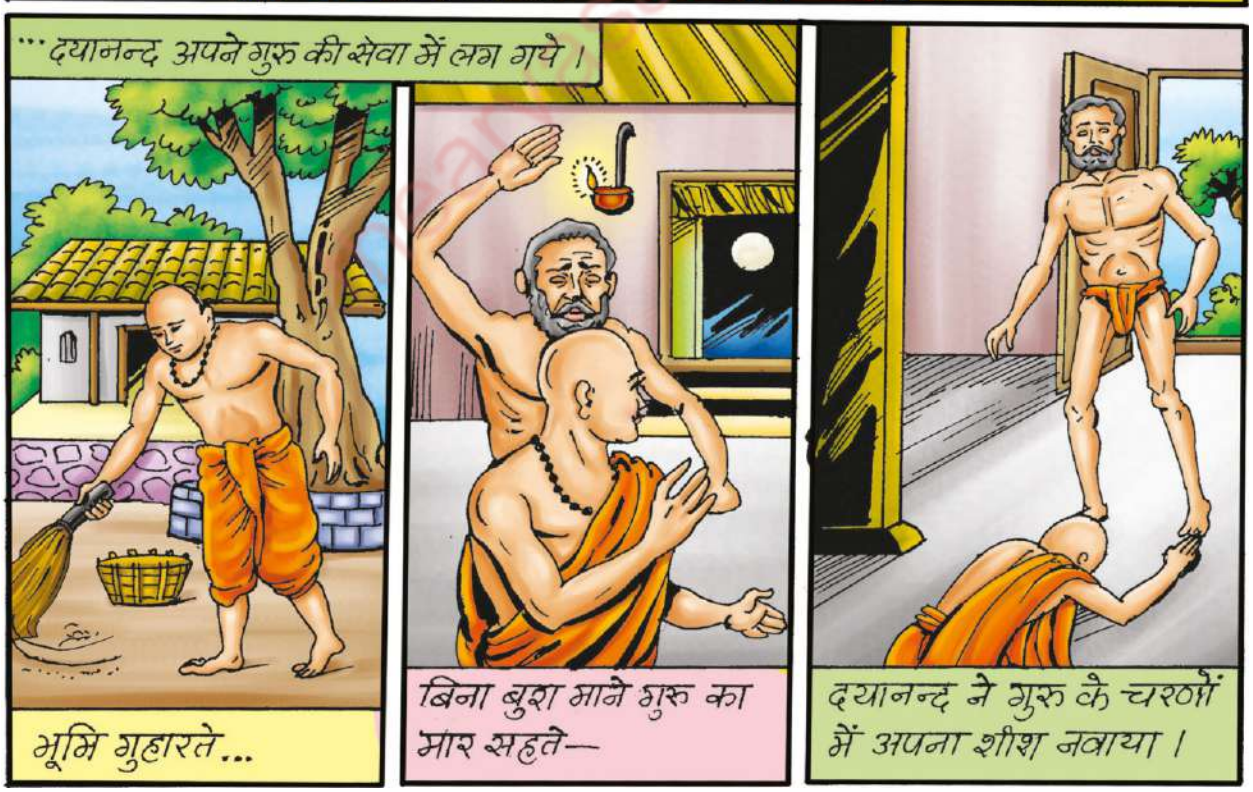
...दयानन्द अपने गुरु की सेवा में लग गये।
भूमि गुहारते...
बिना बुरा माने गुरु का मार सहते—
दयानन्द ने गुरु के चरणों में अपना शीश नवाया।

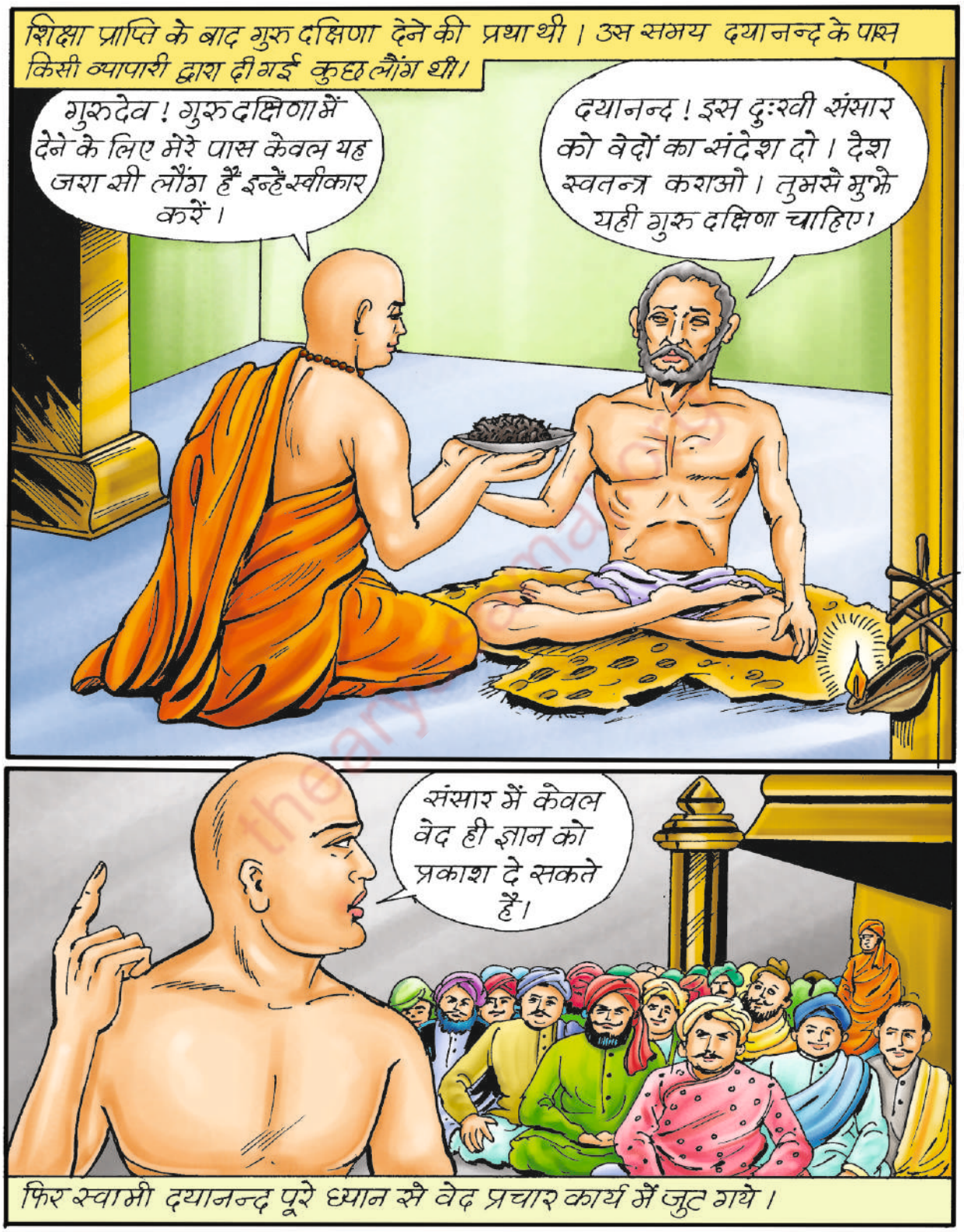
शिक्षा प्राप्ति के बाद गुरु दक्षिणा देने की प्रथा थी। उस समय दयानन्द के पास किसी व्यापारी द्वारा दी गई कुछ लौंग थी।
गुरुदेव ! गुरु दक्षिणा में देने के लिए मेरे पास केवल यह जरा सी लौंग हैं इन्हें स्वीकार करें।
दयानन्द ! इस दुःखी संसार को वेदों का संदेश दो। देश स्वतन्त्र कराओ। तुमसे मुझे यही गुरु दक्षिणा चाहिए।
संसार में केवल वेद ही ज्ञान को प्रकाश दे सकते हैं।
फिर स्वामी दयानन्द पूरे ध्यान से वेद प्रचार कार्य में जुट गये।

1857: धार्मिक एकता–

मानव-मानव एक समान

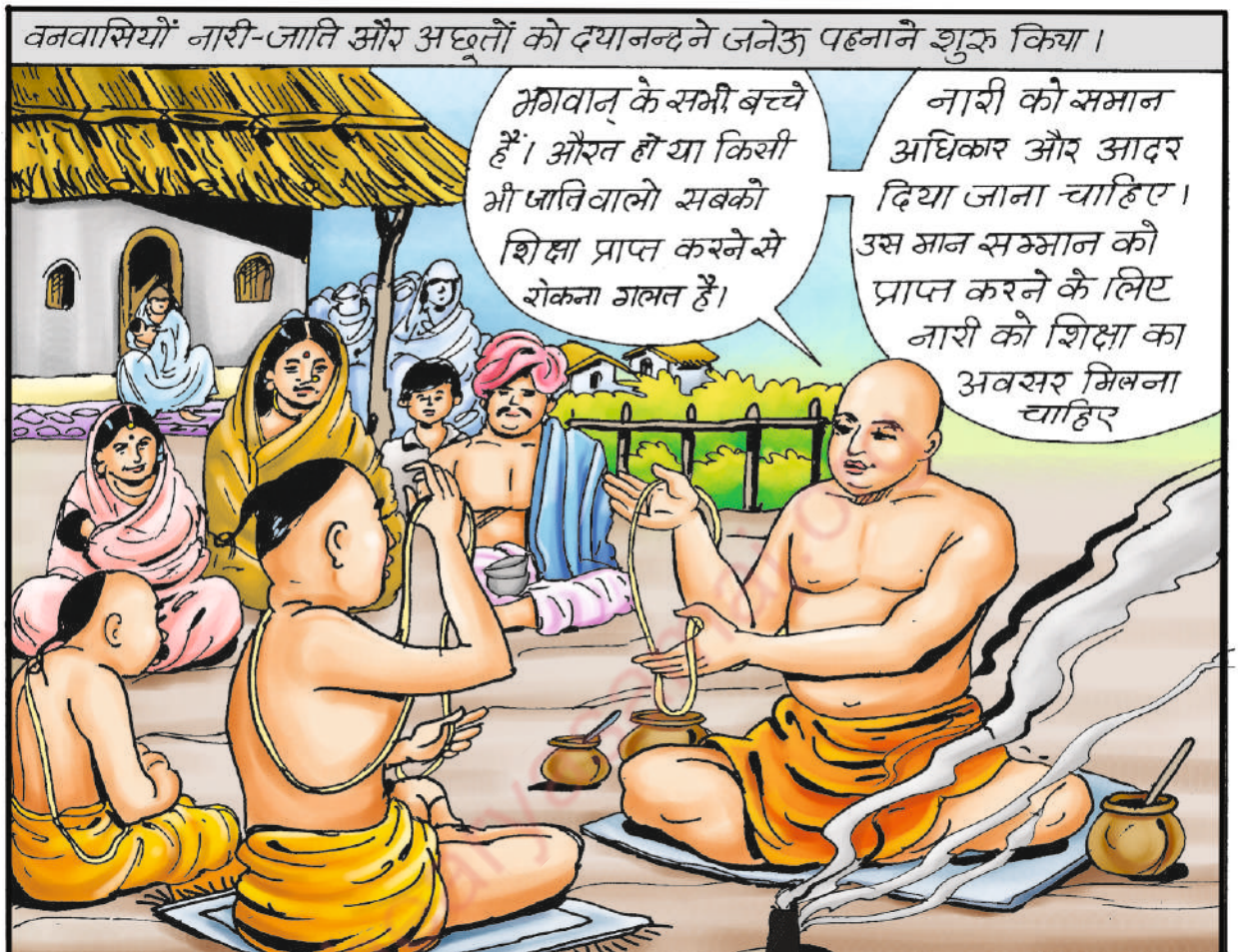

उन्होंने देश के सभी वर्गों में समाज सुधार का कार्य किया। वनवासी क्षेत्रों में उनके कार्यों से प्रभावित हो कर भील नेता 'विरसा मुण्डा' व गुरु गोविन्द सिंह ने मिलकर समाजवादी कार्य किये।

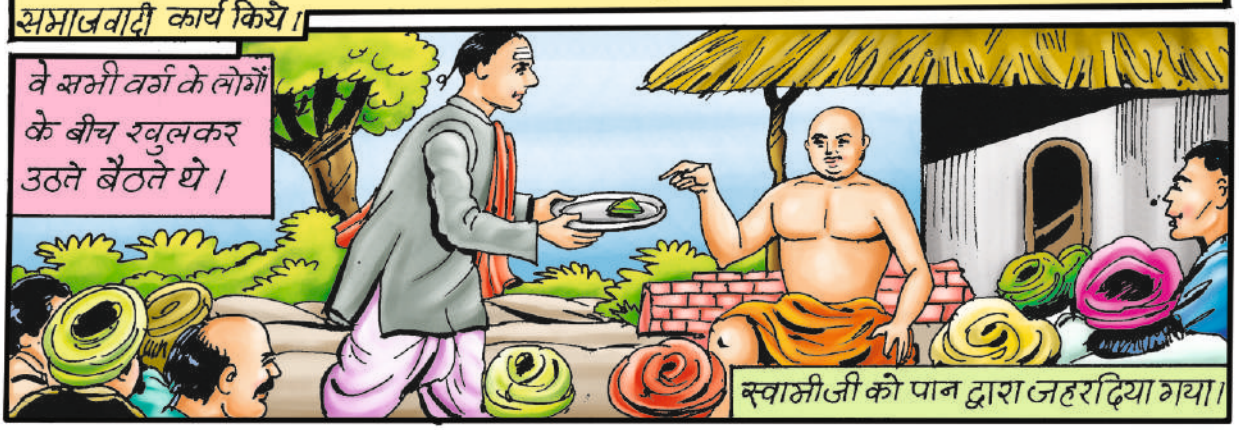

लोगों को बन्दी बनाने नहीं आया—

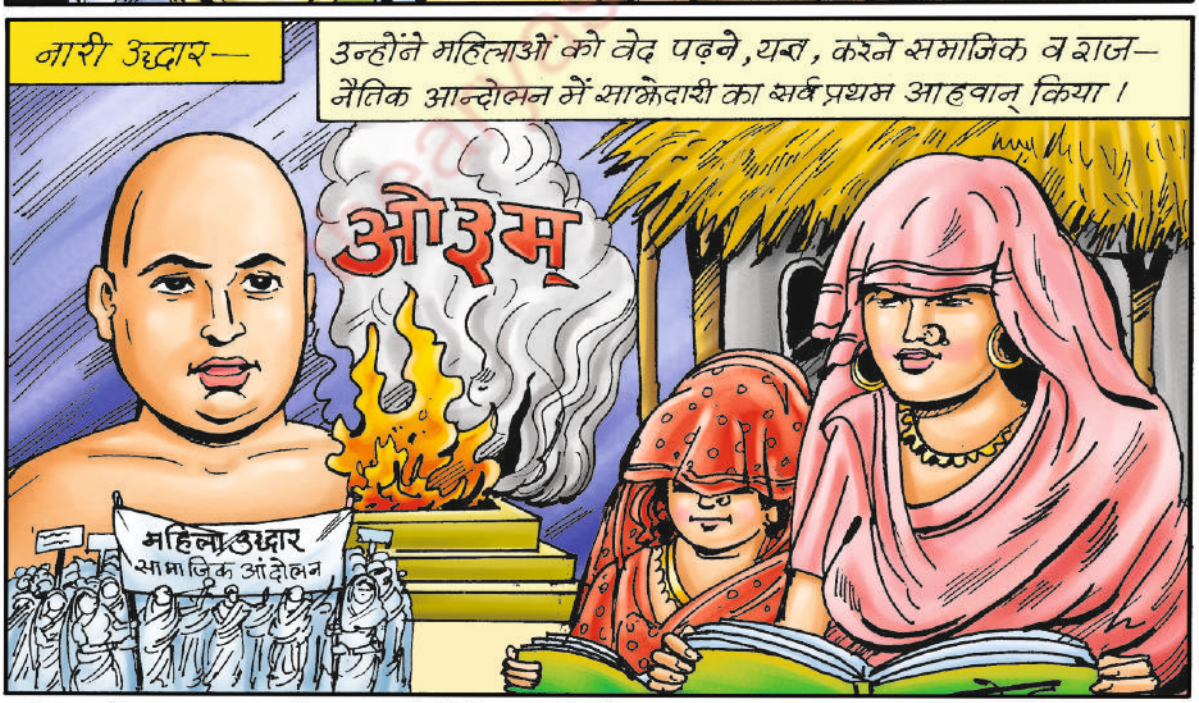

* विधवा विवाह का समर्थन कर करोड़ों विधवाओ को नवजीवन प्रदान किया। कन्या विद्यालय प्रारम्भ करवाये।

पादरियों से विचार विमर्श—

गौरक्षा के लिए कर्नल ब्रुक से भेट—

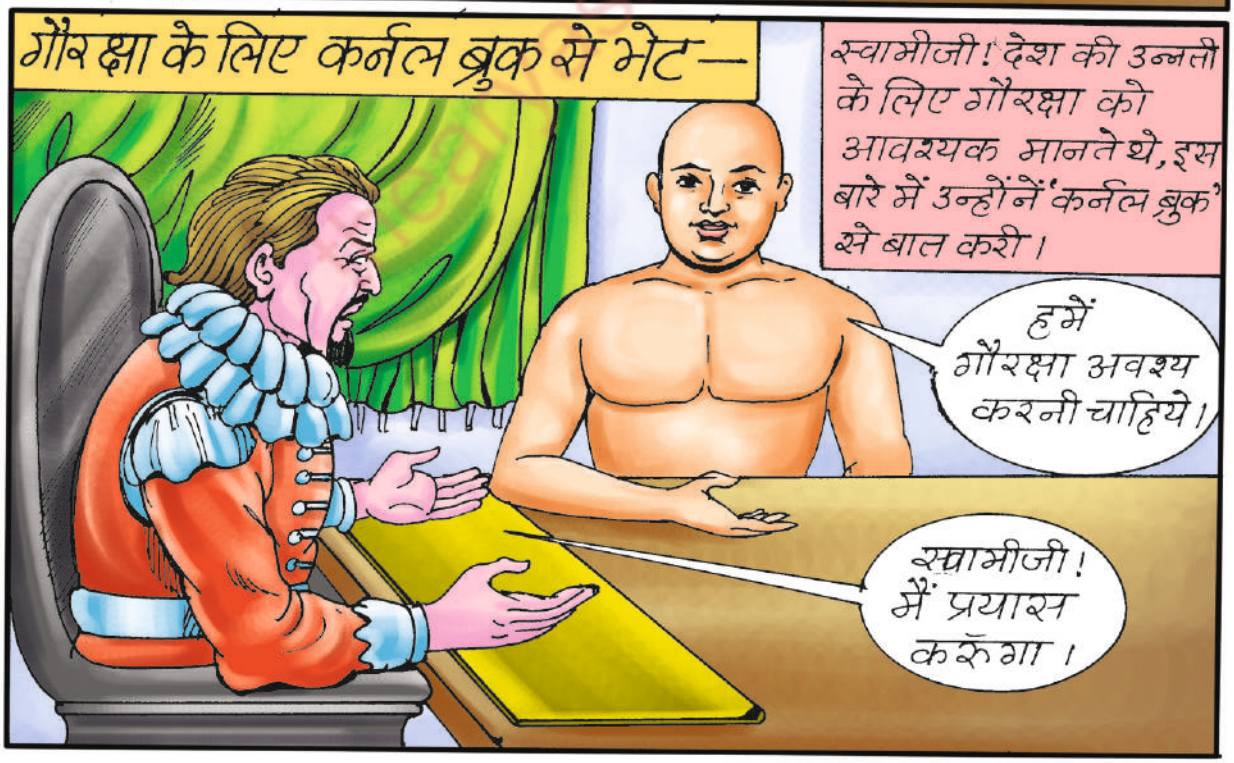

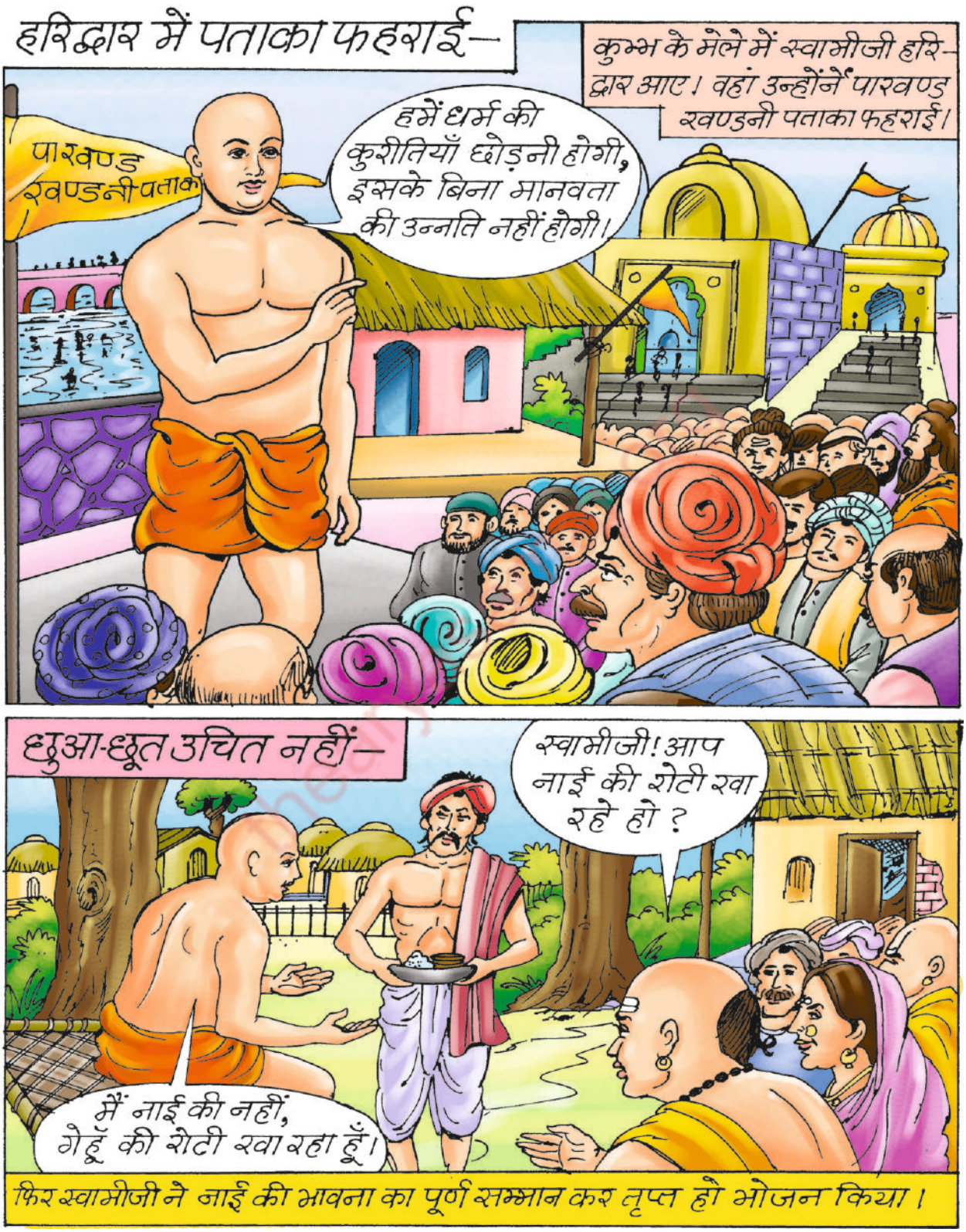
हरिद्वार में पताका फहराई—
कुम्भ के मेले में स्वामीजी हरिद्वार आए। वहां उन्होंने पाखण्ड खण्डनी पताका फहराई।
पाखण्ड खण्डनी पताका
हमें धर्म की कुरीतियाँ छोड़नी होंगी, इसके बिना मानवता की उन्नति नहीं होगी।
छुआ-छूत उचित नहीं—
स्वामीजी! आप नाई की रोटी खा रहे हो ?
मैं नाई की नहीं, गेहूँ की रोटी खा रहा हूँ।
फिर स्वामीजी ने नाई की भावना का पूर्ण सम्मान कर तृप्त हो भोजन किया।

राव कर्णसिंह का गर्व टूटा-

राव कर्णसिंह, स्वामी जी द्वारा की गई रासलीला की आलोचना को सहन नहीं कर सका और उन्हें कुवाक्य वचन कहने लगा। और स्वामीजी बड़ी देर तक उसे सुनते रहे। पर जब कर्णसिंह तलवार का जोर दिखाने लगा तब...

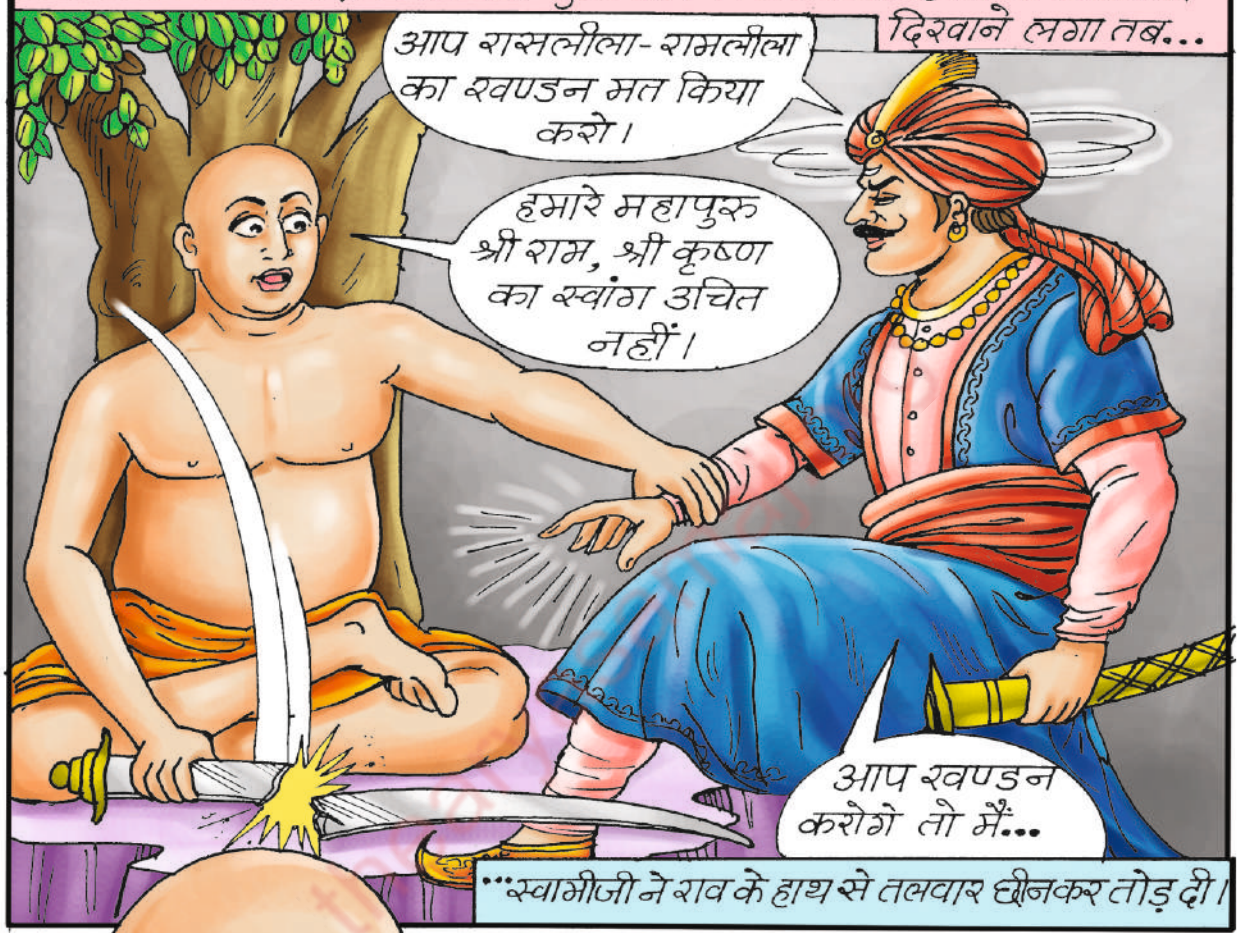

...स्वामीजी ने राव के हाथ से तलवार छीनकर तोड़ दी।

राव लज्जित होकर वहां से चला गया।

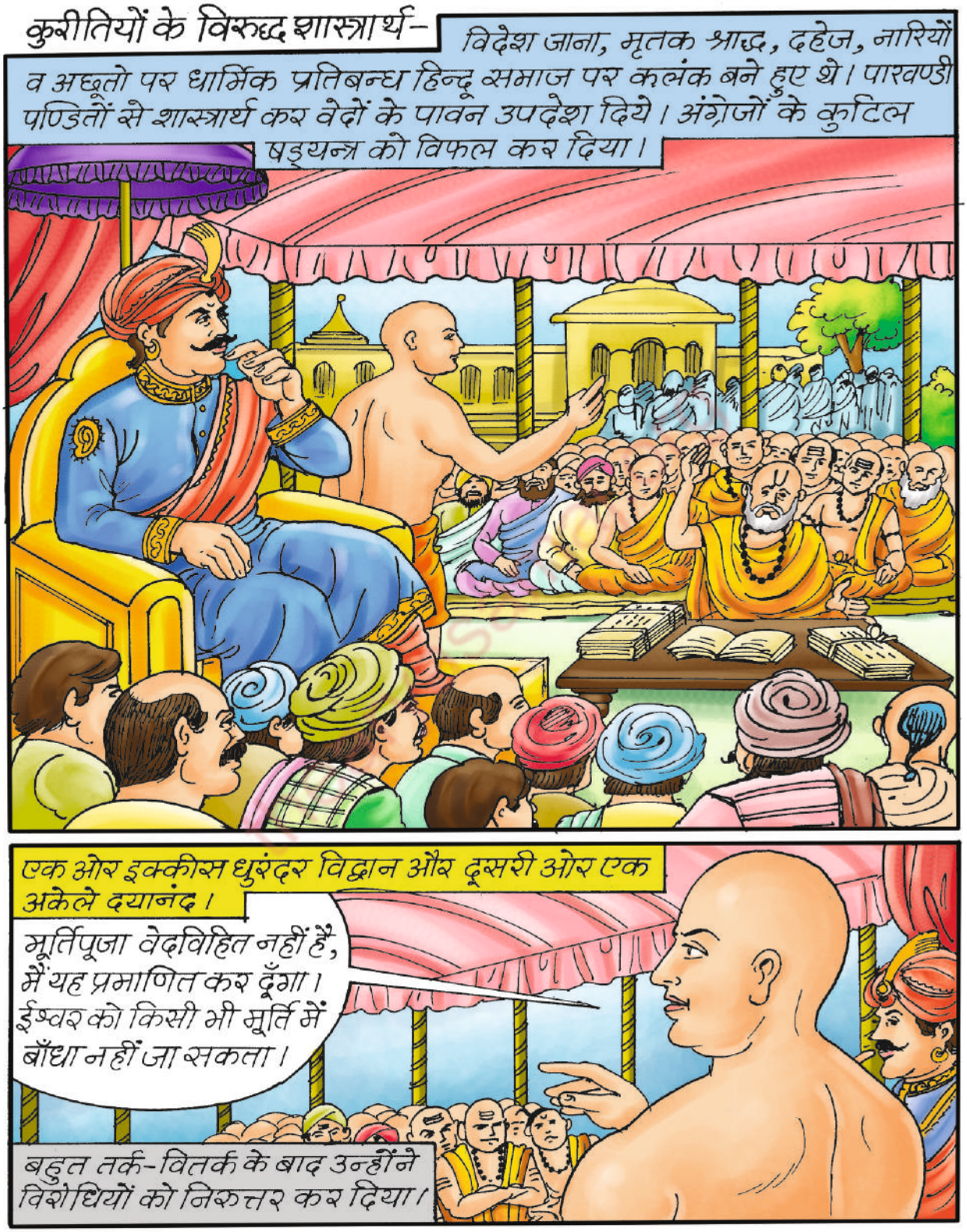
कुरीतियों के विरुद्ध शास्त्रार्थ-
विदेश जाना, मृतक श्राद्ध, दहेज, नारियों व अछूतो पर धार्मिक प्रतिबन्ध हिन्दू समाज पर कलंक बने हुए थे। पाखण्डी पण्डितों से शास्त्रार्थ कर वेदों के पावन उपदेश दिये। अंग्रेजों के कुटिल षड्यन्त्र को विफल कर दिया।
एक ओर इक्कीस धुरंदर विद्वान और दूसरी ओर एक अकेले दयानंद।
मूर्तिपूजा वेदविहित नहीं है, मैं यह प्रमाणित कर दूँगा। ईश्वर को किसी भी मूर्ति में बाँधा नहीं जा सकता।
बहुत तर्क-वितर्क के बाद उन्होंने विरोधियों को निरुत्तर कर दिया।

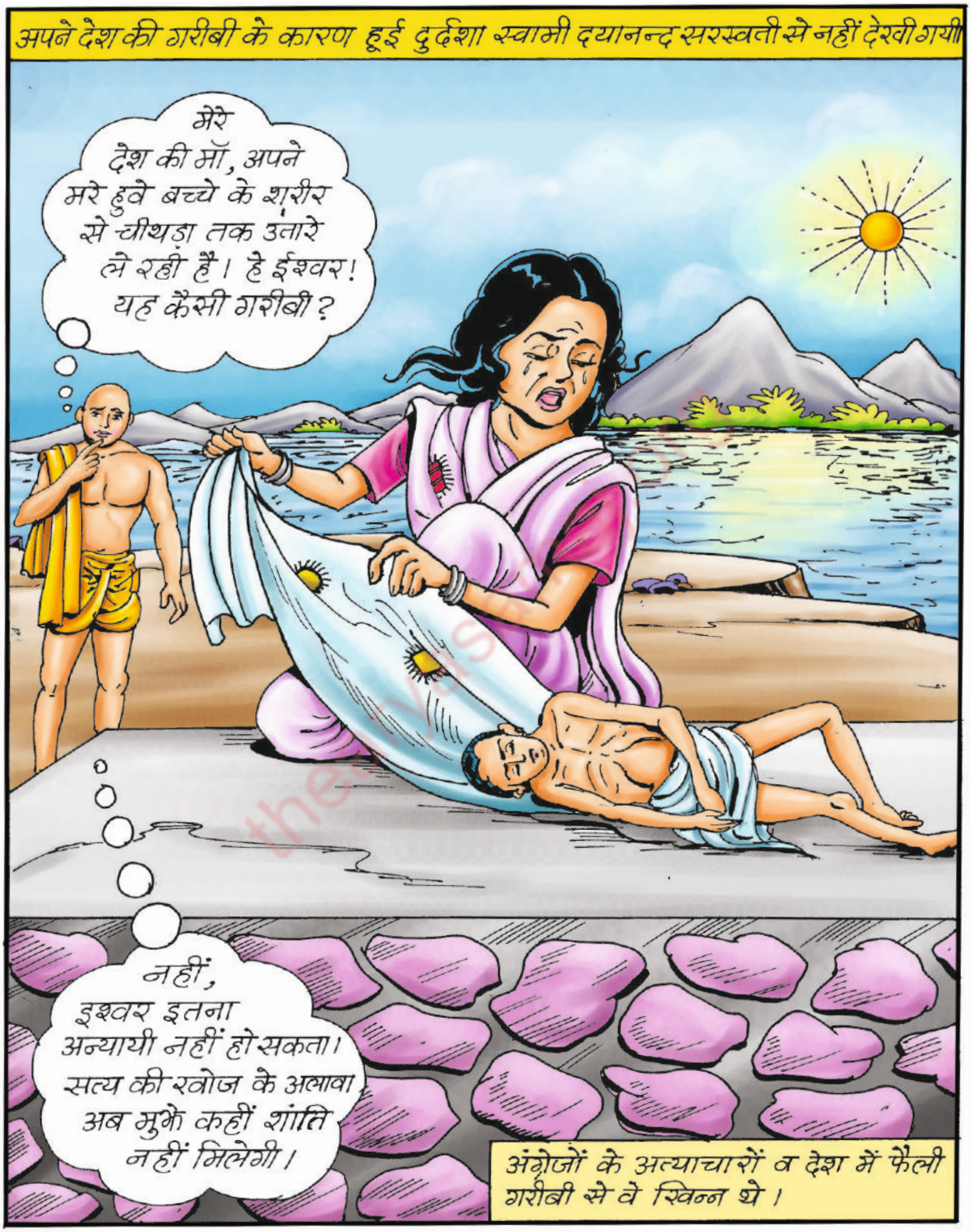
अपने देश की गरीबी के कारण हुई दुर्दशा स्वामी दयानन्द सरस्वती से नहीं देखी गयी
मेरे देश की माँ, अपने मरे हुवे बच्चे के शरीर से चीथड़ा तक उतारे ले रही हैं। हे ईश्वर! यह कैसी गरीबी?
नहीं, इश्वर इतना अन्यायी नहीं हो सकता। सत्य की खोज के अलावा अब मुझे कहीं शांति नहीं मिलेगी।
अंग्रेजों के अत्याचारों व देश में फैली गरीबी से वे खिन्न थे।

तांत्रिक मायाजाल का खण्डन–

भारतीय धर्म के इतिहास में दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तंत्राधारित वाम-मार्ग तथा इस विचार-सरणि का प्रबल खण्डन किया।

स्वामीजी अद्भुत बल के 'स्वामी'

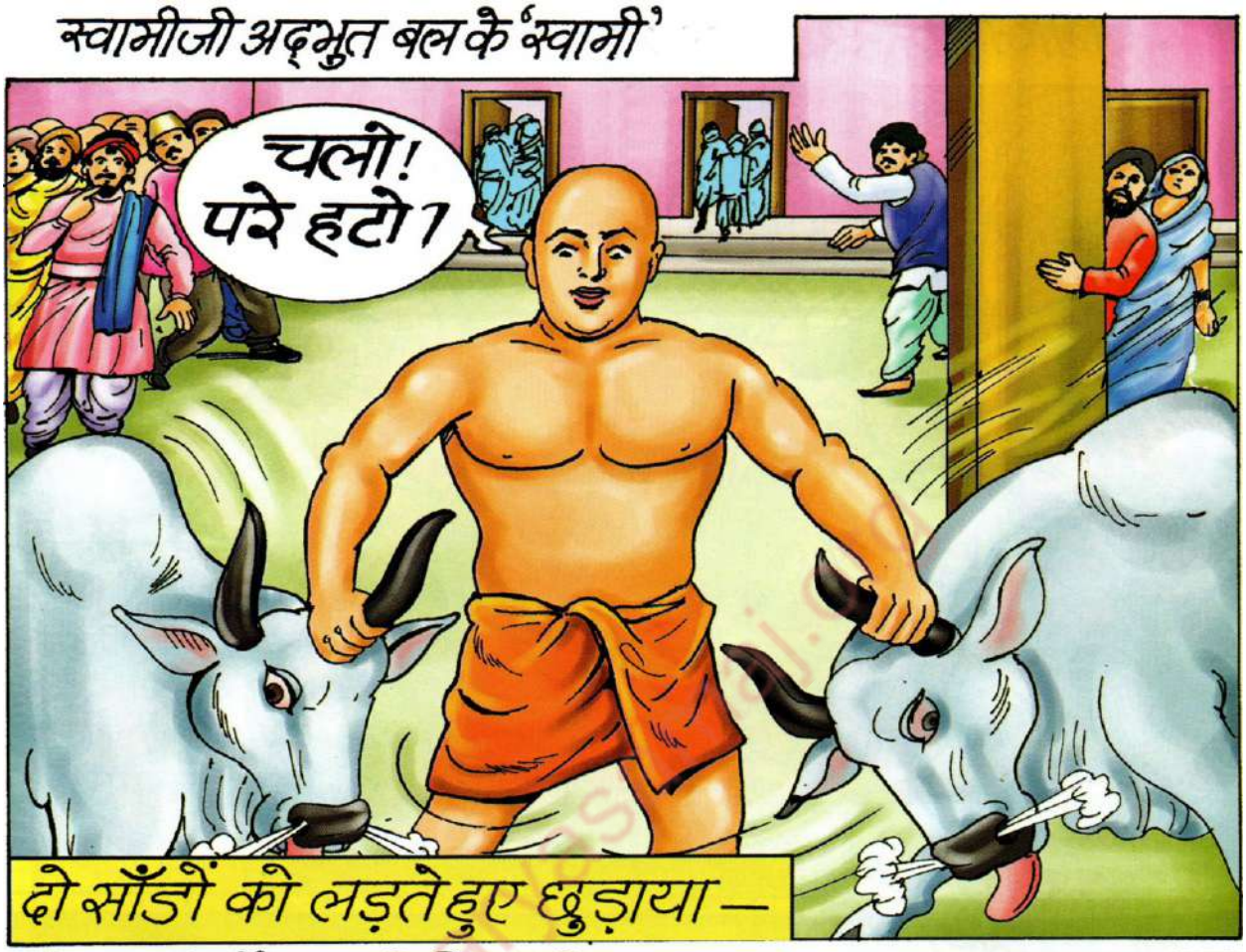

दो साँडों को लड़ते हुए छुड़ाया –

कीचड़ से बैलगाड़ी निकाली–

ब्रह्मचर्य की शक्ति से कीचड़ में फंसी बैलगाड़ी निकाली।

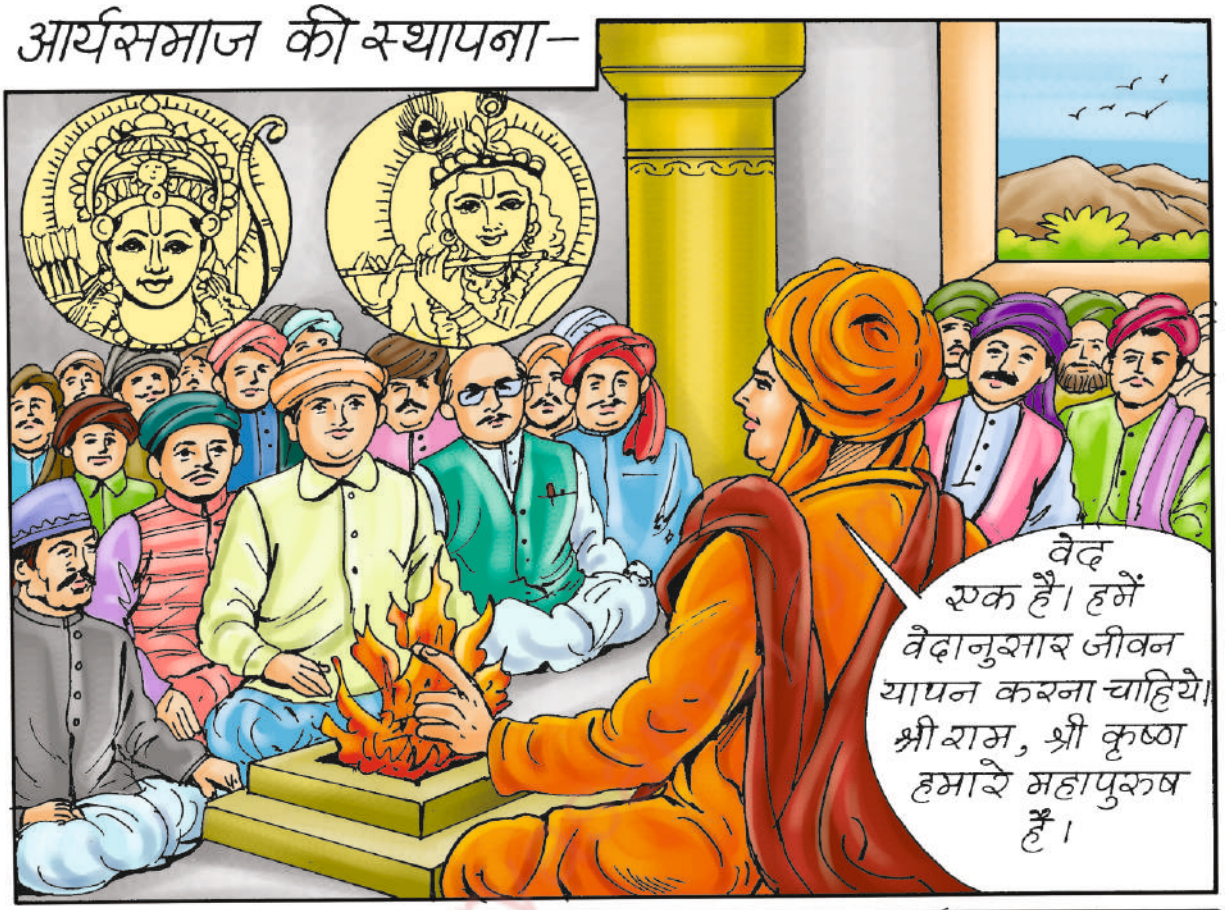
आर्यसमाज की स्थापना–
वेद एक है। हमें वेदानुसार जीवन यापन करना चाहिये। श्री राम, श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं।

पूणे में प्रवचन–
गृहस्थ जीवन ही सभी आश्रमों का आधार है।

दिल्ली दरबार में राष्ट्र कल्याण की चर्चा-

स्वामीजी ने दिल्ली में ब्रह्मसमाज के सूत्रधार केशवचन्द्र सेन, बाबू नवीन-चन्द्र राय, सुधारवादी मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खां, बाबू हरीश्चन्द्र चिन्तामणि, कन्हैयालाल अलखधारी और मुन्शी इन्द्रमणि आदी महानुभावों की संगोष्ठी बुलाकर उनसे विचार विनिमय किया।

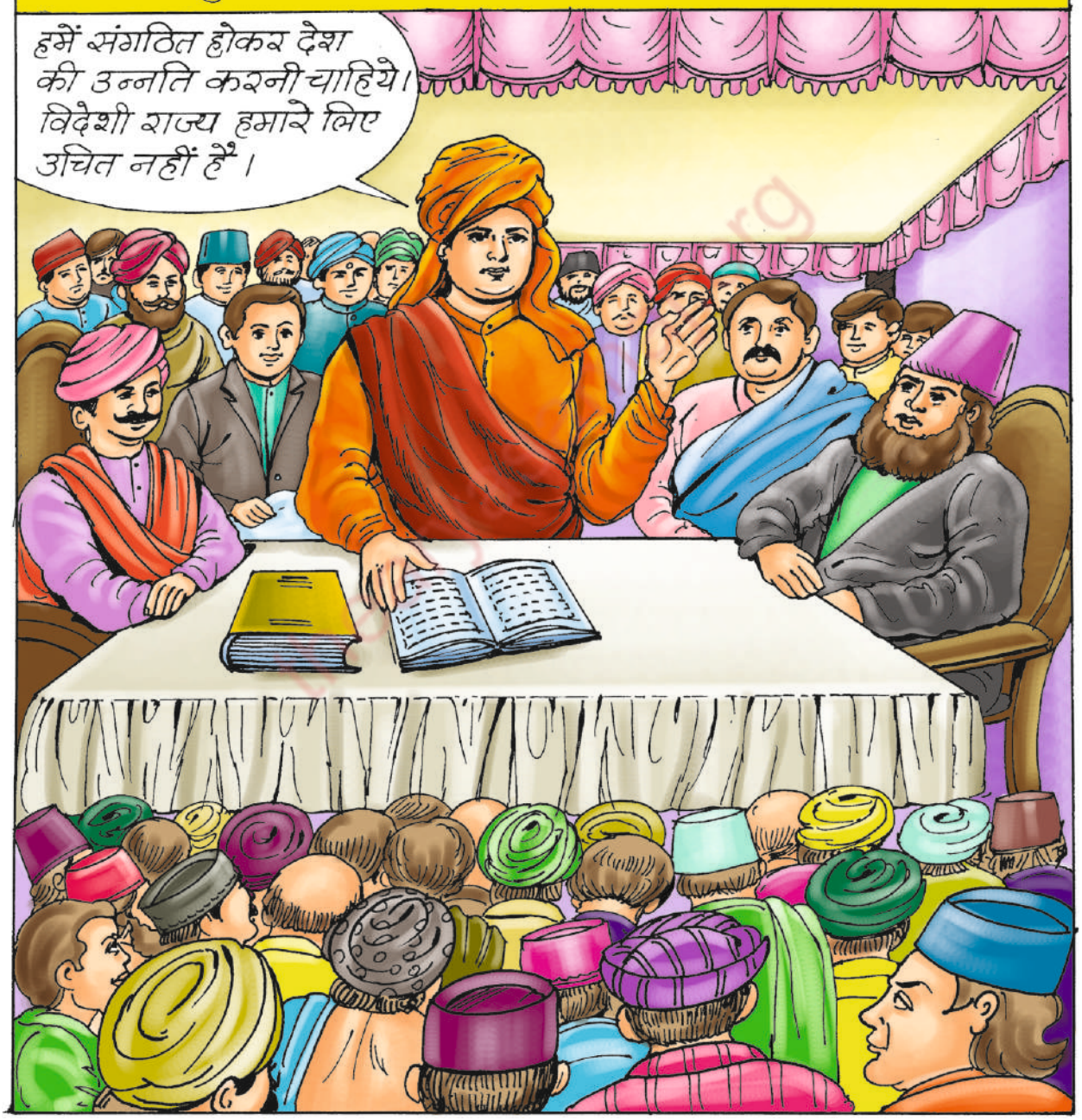

ब्रह्मचर्य शक्ति का प्रदर्शन–

जालन्धर के सरदार विक्रमसिंह ने स्वामीजी से कहा कि आप ब्रह्मचर्य से अतुलबल की प्राप्ति की बात करते करते हैं, पर इसका सबूत क्या हैं? उस समय स्वामीजी चुप रहे। पर सांझ के समय सरदार विक्रम सिंह अपनी बग्गी में बैठकर घुमने निकले तब उन्होंने बग्गी का एक पहियां अपने हाथ से पकड़ लिया। बग्गी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई तब सरदार विक्रम-सिंह को ब्रह्मचर्य के बल का सबूत मिल गया।

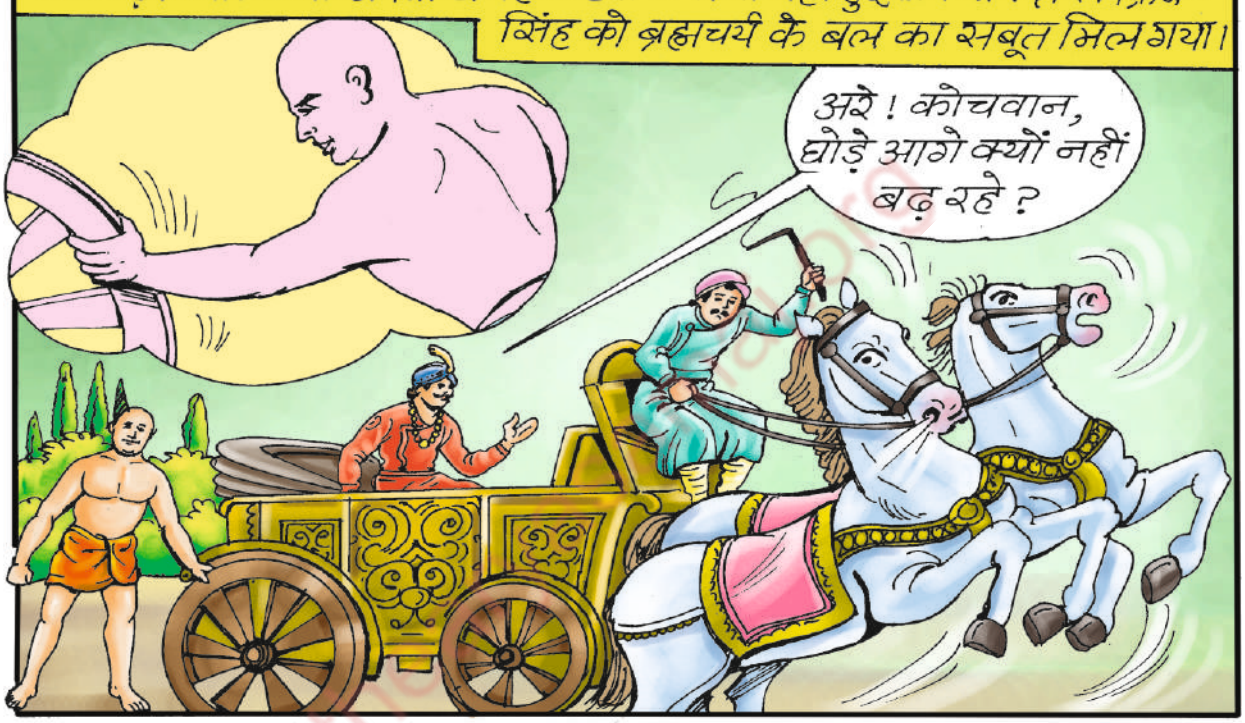

ब्रह्मचर्य से साहस व निडरता–

दुराचारियों को सुधारा —

स्वामीजी के वचन सुनते ही अमीचंद पर बिजली का सा असर हुआ। उसने घर जाकर शराब की बोतलें तोड़ दीं तथा अपनी पत्नी को ससम्मान घर ले आया।

थियोसोफिकल सोसायटी से सम्बन्धविच्छेद-

रमाबाई को संस्कृत विदुषी बनाने में योगदान-

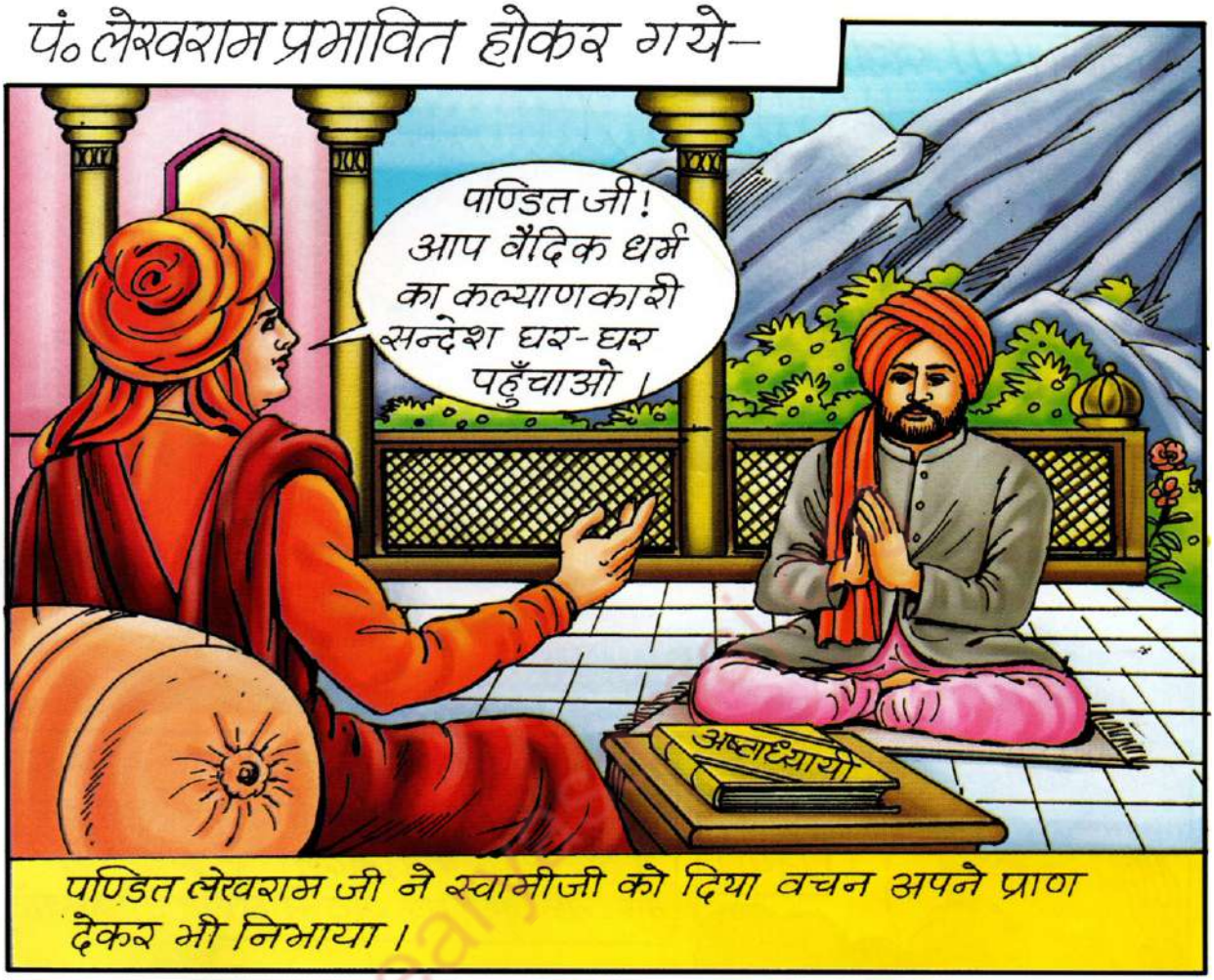
पं० लेखराम प्रभावित होकर गये–
पण्डित जी! आप वैदिक धर्म का कल्याणकारी सन्देश घर-घर पहुँचाओ।
अष्टाध्यायी
पण्डित लेखराम जी ने स्वामीजी को दिया वचन अपने प्राण देकर भी निभाया।

मुंशीराम(स्वामी श्रद्धानंद)का जीवन महर्षि के सत्संग से पलटा।
आपके तर्क तो ठीक हैं। पर मुझे विश्वास नहीं होता।
जब ईश्वर की कृपा होगी, तभी आपको विश्वास होगा।
मुंशीराम ही महान् स्वतन्त्रता सेनानी व गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के संस्थापक 'स्वामी श्रद्धानंद' बने।

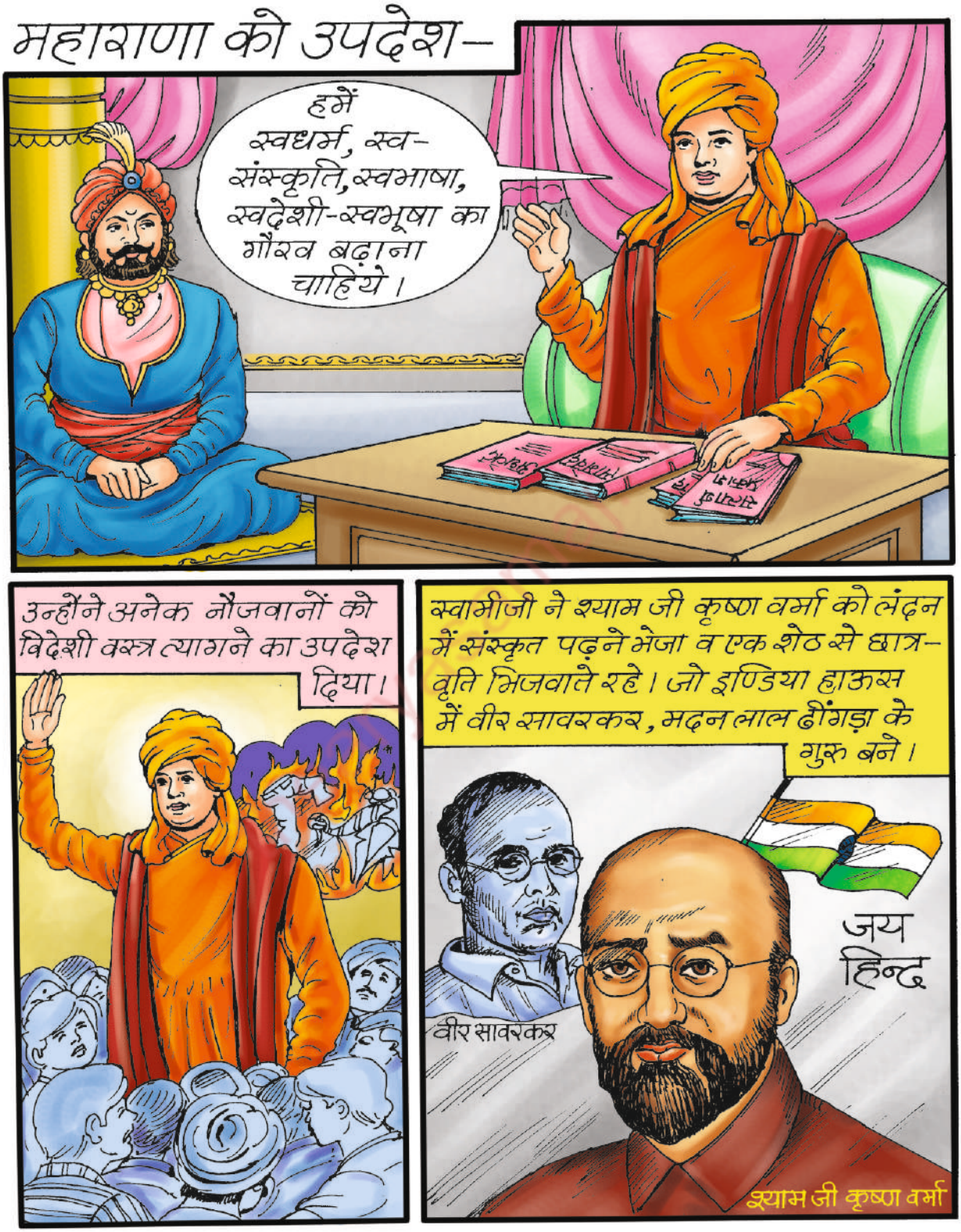
महाराणा को उपदेश–
हमें स्वधर्म, स्व-संस्कृति, स्वभाषा, स्वदेशी-स्वभूषा का गौरव बढ़ाना चाहिये।
उन्होंने अनेक नौजवानों को विदेशी वस्त्र त्यागने का उपदेश दिया।
स्वामीजी ने श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन में संस्कृत पढ़ने भेजा व एक शेठ से छात्र-वृति भिजवाते रहे। जो इण्डिया हाऊस में वीर सावरकर, मदन लाल ढींगड़ा के गुरु बने।
जय हिन्द
वीर सावरकर
श्याम जी कृष्ण वर्मा

राजपूताने में कार्य–

उदयपुर में महर्षि के 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना से 'वैचारिक क्रान्ति' का आन्दोलन तेज हो गया। अनेक नौजवान वैदिक धर्म में दीक्षित होकर स्वसंस्कृति, स्वराज्य-संघर्ष के लिए तैयार होने लगे।

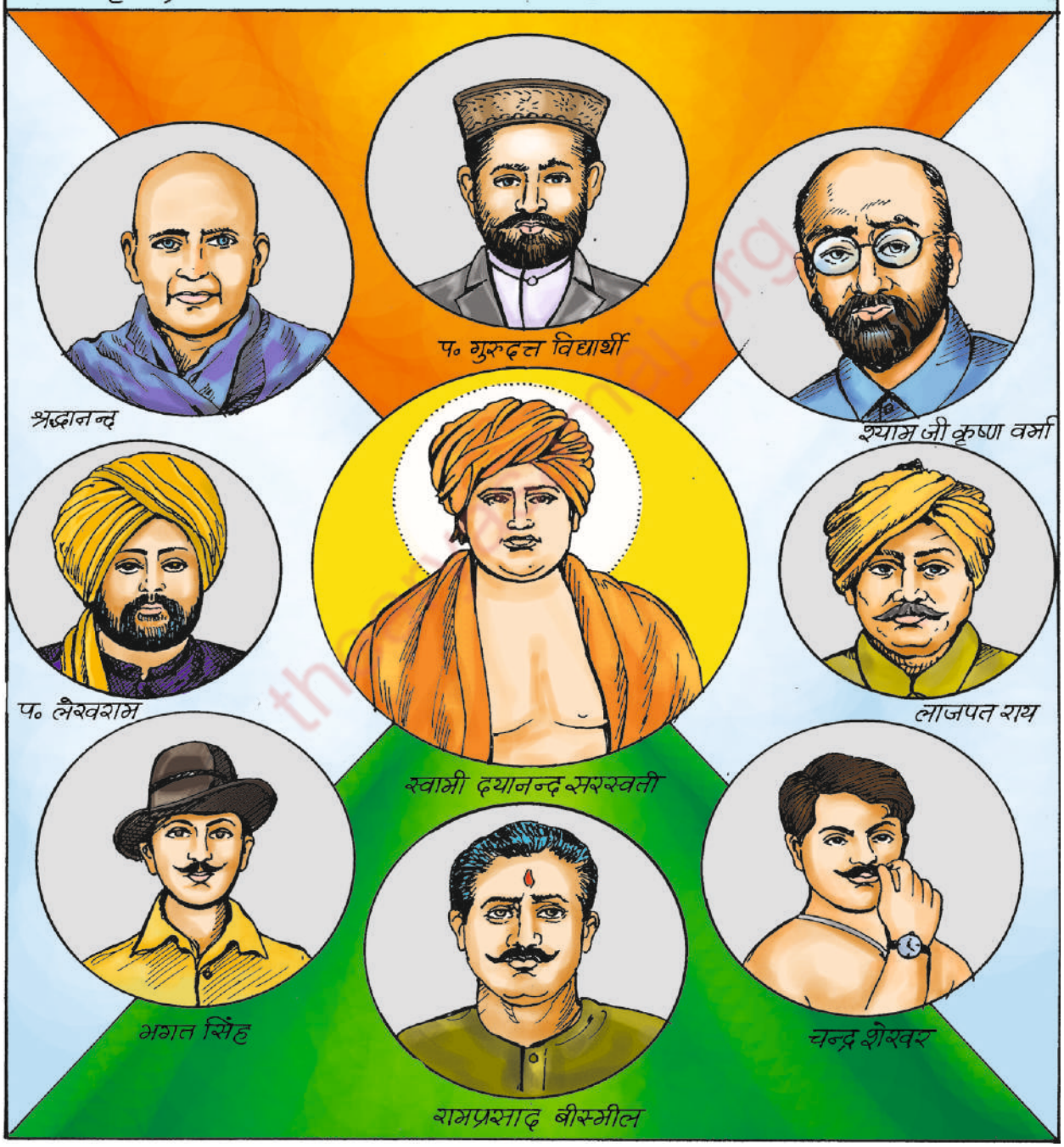

प्रचार हेतु स्वामीजी जोधपुर गये। वहाँ जोधपुर नरेश को नन्हीं नाम की नाचने वाली के साथ देखा तो स्वामीजी खिन्न हो उठे।
भला एक राजा का नाचने वाली से कैसा सम्बन्ध?
यह फ़कीर बहुत गड़बड़ कर रहा है, इसका मुंह बन्द करना ही होगा।
स्वामीजी! यह रहा आपका दूध।
नरेश ने नन्हीं को वहाँ से चले जाने की आज्ञा दी। अंग्रेज़ों व नन्हीं जान के षड्यन्त्र से रसोइये ने काँच युक्त दूध में ज़हर मिला कर स्वामीजी को दे दिया।

स्वामीजी के दूध में ज़हर मिला कर जगन्नाथ द्वारा पिला देने पर स्वामीजी के पेट में भयंकर दर्द होने लगा। प्रातः काल डॉ॰ अलीमर्दान खाँ ने इंजेक्शन व अन्य दवाओं के द्वारा स्वामीजी के शरीर में और विष प्रवेश करा दिया।

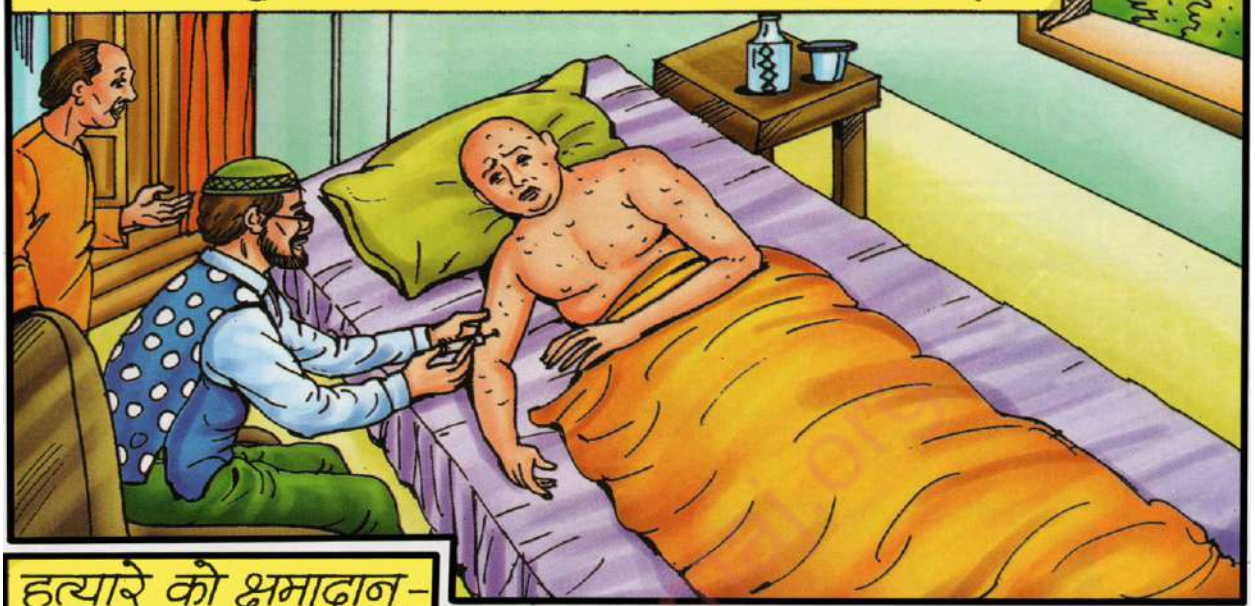

हत्यारे को क्षमादान-

स्वामीजी के पूरे शरीर से ज़हर फूटने लगा अंततः रसोईये को अपनी ग़लती महसूस हुई, उसने स्वामीजी के पास जाकर माफ़ी माँगी।

मृत्युञ्जयी दयानन्द –

अजमेर में 30 अक्तूबर सन् 1883 ई. को अत्यन्त कष्टदायक स्थिति होते हुए भी प्रसन्नचित्त योगमुद्रा में प्राण त्यागते देख गुरुदत्त (नास्तिक युवक) का जीवन ही पलट गया। वह वैदिक धर्म का दीवाना 'पं. गुरुदत्त विद्यार्थी कहलाया।

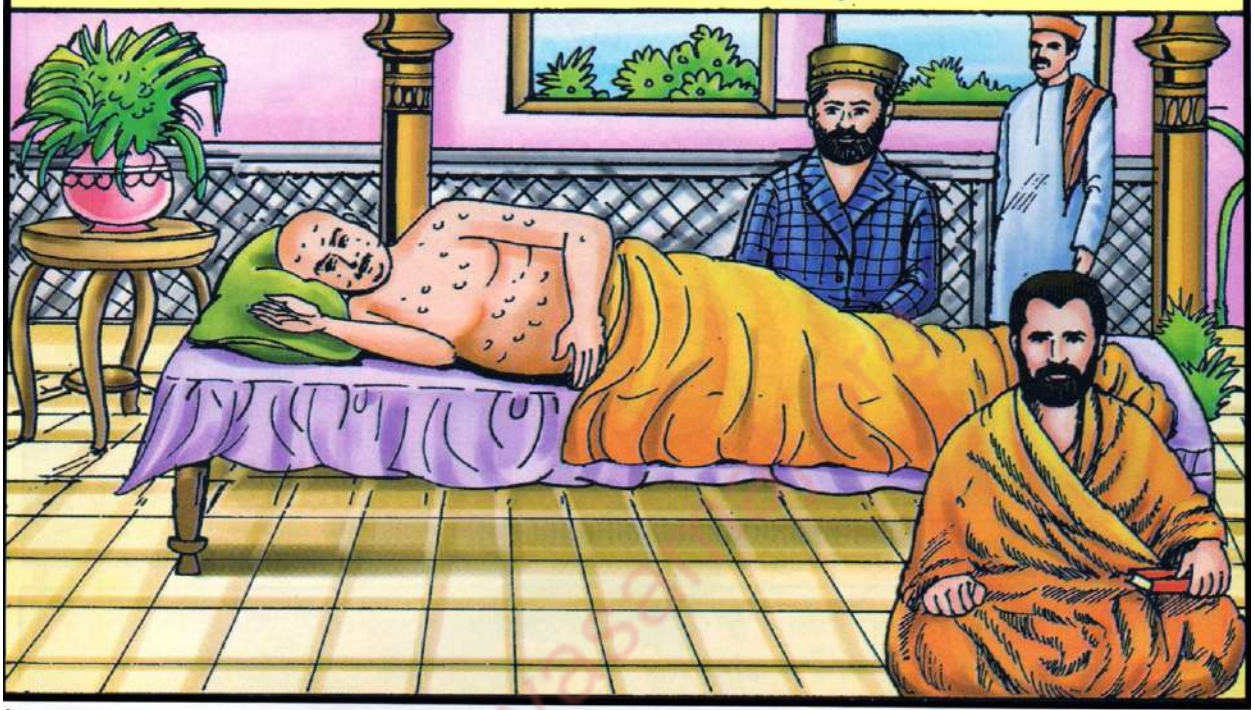

ओ३म् ओ३म्

ओ३म् ओ३म्

वेद मनीषी पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल सन् 1864 को मुलतान नगर के मोहल्ला मातारांवाला में हुआ था। (यह स्थान अब पाकिस्तान में है) आपके पिता लाला रामकृष्ण, स्कूल में अध्यापक थे और फ़ारसी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। आपके पिता का गोत्र अरोड़ा था किन्तु अपने पाँडित्य के कारण गुरुदत्त जी 'पंडित' कहलाये।

महाप्रस्थान के पथ पर –

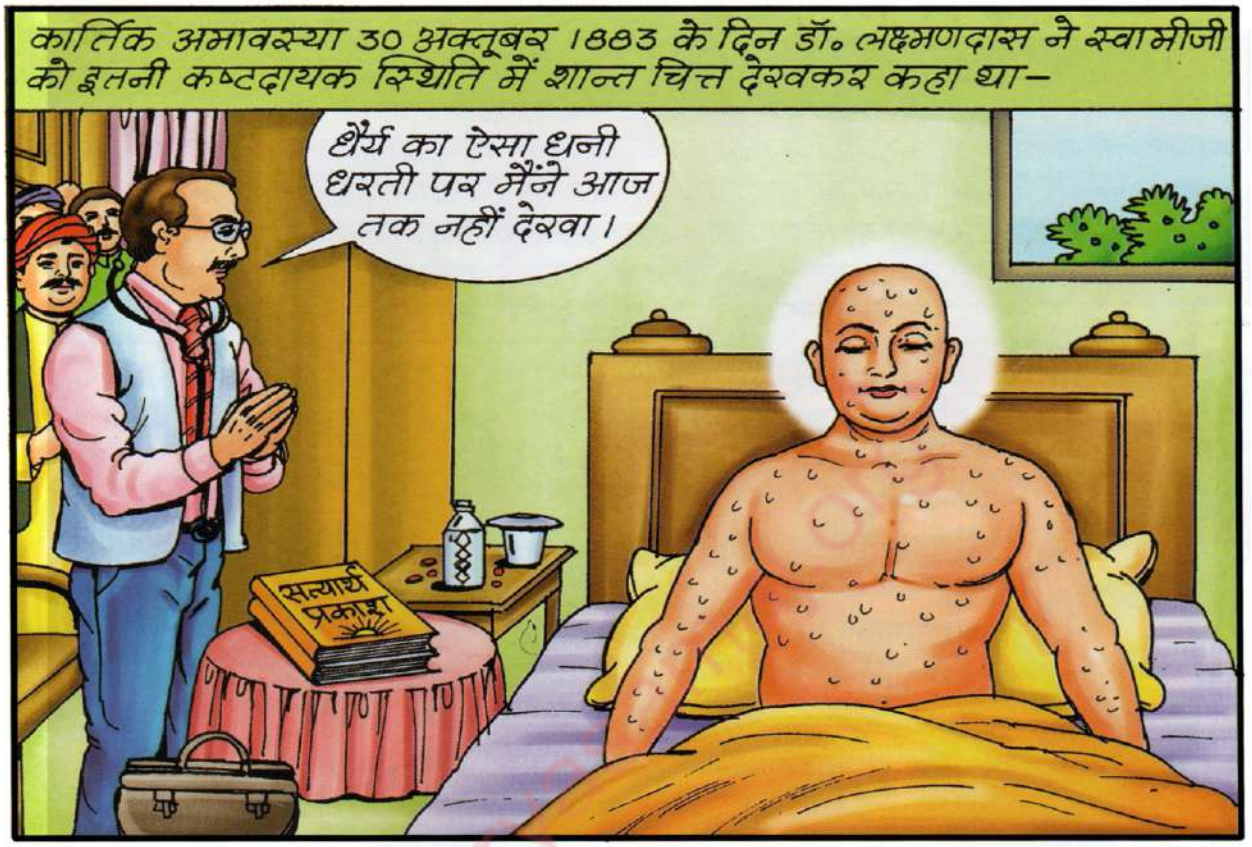

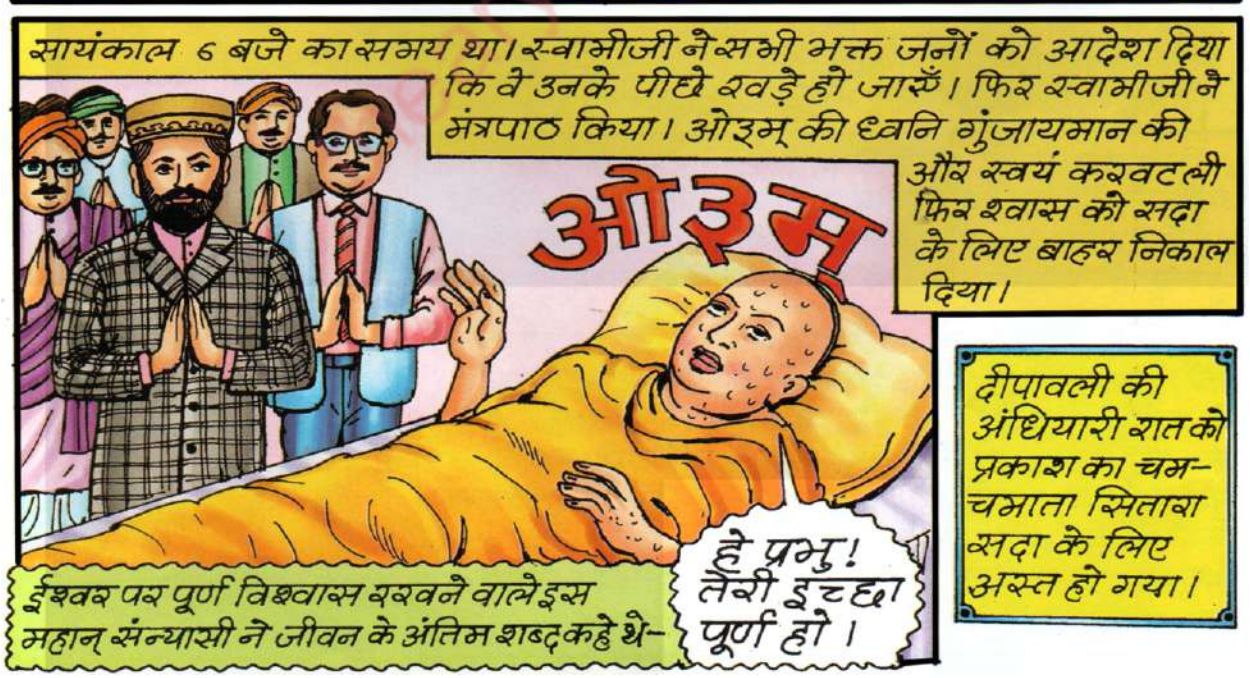

स्वामीजी का स्वप्न –

स्वामीजी का स्वप्न था कि विश्व श्रेष्ठ बने और हमारा भारत देश जो कभी देव-भूमि कहलाता था, आज फिर उसी गरिमा और गौरव को प्राप्त करे। स्वामीजी के इसी स्वप्न को साकारकरने के लिए आज विश्व भर में क़रीब दस हज़ार आर्य समाज मंदिरों के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य हो रहा है। डी॰ए॰वी॰ स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले लाखों विद्यार्थी हमारी आशा के केन्द्र हैं। आर्य समाजों द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय भी ऋषि के स्वप्न को साकार करने में बड़ी भूमिका निभाएंगे। **आर्य अनाथालय, गुरुकुल, संन्यास आश्रम, वान प्रस्थ आश्रम, वृद्ध आश्रम** – इनमें निवास करने वाले स्त्री, पुरुष, बच्चे व बूढ़े सभी हमारी आशा के केन्द्र हैं। स्वामीजी की

वाणी, उनके विचार, स्वामीजी का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने के लिए हम कटिबद्ध हैं। स्वामीजी द्वारा निर्मित **आर्य समाज** ही वह संस्था है जो संसार में सर्वश्रेष्ठ संस्था है तथा सब मनुष्यों का मार्ग दर्शन करने में समर्थ है।

आज संसार को आवश्यकता है-सही मार्ग दर्शन की। इस भूमिका को निभाने के लिए स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाहियों की आवश्यकता है। आओ! हम सब उस महान् योगी, साधु, सन्त, तपस्वी, महर्षि व युगपुरुष के स्वप्नों को साकार करने का सत्य संकल्प करते हैं कि इस देश को पुनः इसके प्राचीन नाम के अनुसार '**आर्यावर्त्त**' बनाएंगे ताकि इस देश की धरती एक बार फिर ऋषि-मुनियों की धरती का गौरव प्राप्त कर सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर आधारित प्रश्न / सही उत्तर पर ☑ करें

१. महर्षि दयानन्द जी का जन्म कहां हुआ?

(क) टंकारी ☐ (ख) टंकारा ☐ (ग) राजकोट

२. महर्षि दयानन्द जी के पिता का नाम क्या था?

(क) श्री कर्षण जी तिवारी ☐ (ख) तिवारी शंकर ☐ (ग) श्री पूर्णानन्द ☐

३. किस घटना से स्वामी जी के जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ आया?

(क) बहिन की मृत्यु ☐ (ख) चाचा की मृत्यु ☐ (ग) शिवरात्रि पर्व ☐

४. संन्यास लेने से पूर्व स्वामी जी का नाम क्या था?

(क) चैतन्य ☐ (ख) नैष्टिक ☐ (ग) शुद्ध चैतन्य ☐

५. महर्षि दयानन्द जी ने अपनी संन्यास दीक्षा किस से ली?

(क) गुरु विरजानन्द ☐ (ख) स्वामी पूर्णानन्द ☐ (ग) स्वामी दीक्षानन्द ☐

६. स्वामी जी के मुख्य गुरु कौन थे?

(क) स्वामी पूर्णानन्द ☐ (ख) श्री आत्मानन्द ☐ (ग) गुरु विरजानन्द ☐

७. महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द जी से किस स्थान पर शिक्षा प्राप्त की?

(क) बनारस ☐ (ख) मथुरा ☐ (ग) पुरी ☐

८. महर्षि दयानन्द जी किस आयु में गुरु के पास शिक्षा लेने पहुंचे?

(क) २१ वर्ष ☐ (ख) १८ वर्ष ☐ (ग) ३६ वर्ष ☐

९. महर्षि दयानन्द जी से गुरु विरजानन्द जी ने दक्षिणा में क्या मांगा था?

(क) धन ☐ (ख) जीवन ☐ (ग) लौंग ☐

१०. स्वामी जी के ब्रह्मचर्य बल की प्रमुख घटनाएं।

(क) रथ का पहिया रोकना ☐ (ख) दो बैलों को छुड़ाना ☐ (ग) क और ख दोनों ☐

११. स्वामी जी ने पहली आर्य समाज की स्थापना कहां की?

(क) कलकत्ता ☐ (ख) बम्बई ☐ (ग) लाहौर ☐

१२. स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना कब की?

(क) सन् १८७४ ☐ (ख) सन् १८७५ ☐ (ग) सन् १८८३ ☐

१३. महर्षि दयानन्द जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका कहां फहराई?

(क) इलाहाबाद ☐ (ख) पुष्कर ☐ (ग) हरिद्वार ☐

१४. महर्षि दयानन्द जी का देहावसान (निधन) कहां हुआ?

(क) उदयपुर ☐ (ख) अजमेर ☐ (ग) जयपुर ☐

१५. महिलाओं को वेद पढ़ने और यज्ञ करने का अधिकार आधुनिक भारत में किसने दिया?

(क) महर्षि दयानन्द सरस्वती ☐ (ख) सर सैयद अहमद खां ☐ (ग) स्वामी विवेकानन्द ☐

१६. तन्त्र विद्या अवैदिक है?

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

१७. महर्षि दयानन्द सतीप्रथा के समर्थक थे।

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

thearyasamaj.org

१८. महर्षि दयानन्द ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया।

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

१९. क्या ईश्वर को किसी मूर्ति में बांधा जा सकता है?

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२०. क्या मांसाहार मनुष्यों का भोजन है?

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२१. कौन सा ग्रन्थ विश्व में ज्ञान का प्रकाश कर सकता है?

(क) वेद ☐ (ख) पुराण ☐ (ग) गीता ☐

२२. महर्षि दयानन्द जी का निर्वाण (निधन) किस दिन हुआ?-

१. दीपावली, २. अमावस्या, ३. ३० अक्तूबर, १८८३

(क) १ ☐ (ख) १ और २ ☐ (ग) १, २ और ३ (तीनों) ☐

२३. वेद ईश्वरीय वाणी है। श्रीराम एवं श्री कृष्ण हमारे महापुरुष हैं।

(क) हां ☐ (ख) नहीं ☐ (ग) पता नहीं ☐

२४. मूलशंकर को किस मठ का मठाधीश बनने का लालच दिया गया?

(क) शोखी मठ ☐ (ख) ओखी मठ ☐ (ग) भोरवी मठ ☐

२५. सभी आश्रमों का आधार कौन-सा आश्रम है?

(क) ब्रह्मचर्य ☐ (ख) संन्यास ☐ (ग) गृहस्थ ☐

thearyasamaj.org

प्रश्न पत्र भरने वाले विद्यार्थी का जानकारी पत्र

विद्यार्थी का नाम.....पिता का नाम.....

आयु.....वर्ष.....मास.....दिन.....

जन्म तिथि : .....

घर का पूरा पता .....

.....राज्य.....पिन .....

फोन/मो. .....Email.....

विद्यालय का नाम एवं पूरा पता.....

.....विद्यालय का Email.....

हस्ताक्षर

ओ३म्

करें कॉमिक्स के माध्यम से प्रचार-दें युवा पीढ़ी को श्रेष्ठ संस्कार

बाल प्रचार शृंखला के कॉमिक्स (चित्र कथाऐं)

कॉमिक्स हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषाओं में भी उपलब्ध।

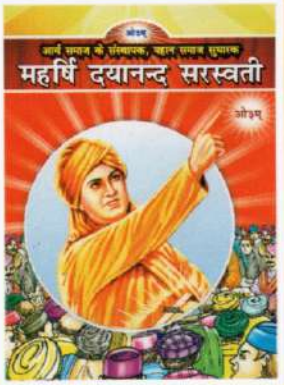

इस में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्श जीवन का चित्रों सहित संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। निश्चित रूप से इससे बच्चे उनके आदर्श जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे एवं प्रेरणा ले सकेंगे। अंत में एक लघु प्रश्नावली भी दी गई है। हिन्दी, अंग्रेजी, डच, गुजराती, पंजाबी, बंगला भाषा में भी उपलब्ध।

मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 34

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने लघु ग्रन्थ व्यवहारभानु के माध्यम से सामान्यजन को दृष्टान्तों के द्वारा उचित व्यवहार समझाने का प्रयत्न किया है। इस कॉमिक्स में उन्हीं दृष्टान्तों को चित्रों के माध्यम से बच्चों को समझाने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 32

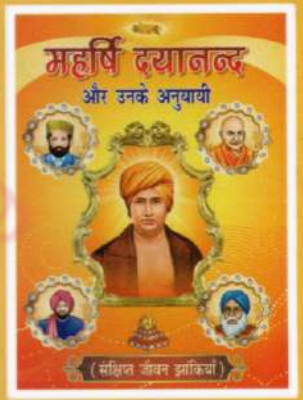

महर्षि दयानन्द जी के वे शिष्य, जिन्होंने अपना जीवन समर्पित करके राष्ट्र की उन्नति एवं समाज सुधार के लिए अथक कार्य किया। ऐसे चार शिष्य -पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंस राज एवं पं. लेखराम जी की संक्षिप्त जीवनी के साथ साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की संक्षिप्त जीवनी भी दी गयी है।

मूल्य - 35/- रु. पृष्ठ 52

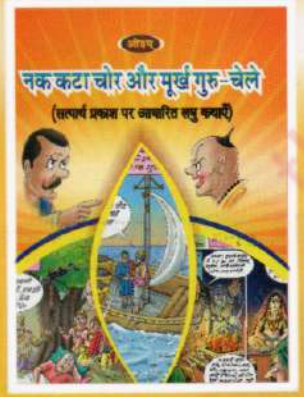

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में अपने विषय को समझाने के लिए अनेक दृष्टान्तों का प्रयोग किया है। ऐसे ही दृष्टान्तों को बच्चों को समझाने हेतु चित्रावली के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य - 30/- रु. पृष्ठ 32

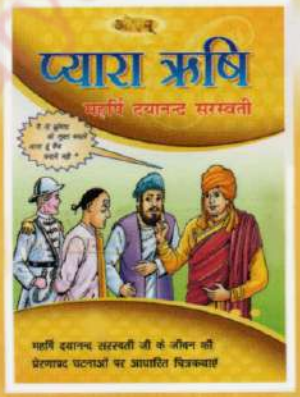

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की ऐसी अनेक प्रेरक घटनाएँ हैं जो व्यक्ति के जीवन को एक नई दिशा दे सकती है। उन्हीं प्रेरक घटनाओं को बच्चों को प्रेरणा देने के लिए चित्रावली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मूल्य - 25/- रु. पृष्ठ 32

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारतीय स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक थे। उनकी प्रेरणा पर उनके अनेक शिष्यों ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन आहुत कर दिया। ऐसे ही शिष्य-सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय भाई परमानन्द आदि की संक्षिप्त जीवनी महर्षि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी के साथ इस चित्रावली में दी गई है।

मूल्य - 35/- रु. पृष्ठ 48

"सत्य असत्य के निर्णय के लिए
सत्यार्थ प्रकाश अवश्य पढ़ें"

DO READ "LIGHT OF TRUTH" & BE NOBLE